एक केरियर एक नौकरी

बहुत से पृष्ठों की बजाय एक मानचित्र आपको कई गुना ज्यादा अंक हासिल करवा सकता है।

—डा. राम बजाज

कोचिंग का कालाबाजार—अध्ययन की कला नहीं सिखा सकता।

—डा. राम बजाज

आत्मा और धर्मराज परन्तु भटकती क्यों है?

कोचिंग संस्थान के निदेशक अचानक चल बसे, जिन्होंने जीते–जी, अपने अधीन पढ़ चुके विद्यार्थियों को 'एक नौकरी, एक केरियर' का गुण सिखाया था। इनका एक बेटा भी था, उसको भी इस तरह का गुर सिखा रहे थे। यम के दूत जब निदेशक की 'आत्मा' को लेने आए तो पाया कि उनके शरीर में 'आत्मा' नाम की कोई चीज है ही नहीं। यमदूतों ने 'धर्मराज' को सारी स्थिति की जानकारी दी।

यह जान कर धर्मराज आगबबूला हो गए। सृष्टि का चक्र रुक जावेगा, अगर आत्मा को न खोजा गया तो। जाओ, फिर से पृथ्वी पर जाकर आत्मा को ढूँढ़ कर लाओ। धर्मराज ने गुस्से में अपने विश्वासपात्र यमदूत को आज्ञा दी।

इस बार कुछ विशेष यमदूतों के साथ विश्वासपात्र यमदूत ने पृथ्वी पर जाकर कोना–कोना छान मारा, परन्तु वह आत्मा नहीं मिली। धर्मराज ने आत्माओं के गायब होने के अपने तजुर्बे का पुराना इतिहास निकाला और पूछा, क्या यह इनसान किसी कोचिंग संस्थान में 'एक नौकरी, एक केरियर' की शिक्षा तो नहीं देता था ? जवाब मिला, श्रीमान्, ताउम्र इन्होंने कोचिंग संस्थान में प्रतियोगी परिक्षाओं की ही तैयारी करवायी है।

हा! हा! हा! धर्मराज ने जोर से ठहाका लगाया। कहा, सीधे जाओ और उसके हॉल में पड़ी किताबों की जाँच करो जहाँ वह किशोरों को कोचिंग क्लासेज का ज्ञान देता था, अन्यत्र कहीं ढूँढ़ने की जरूरत नहीं।

इस बार एक ही यमदूत गया और अलमारी में रखी किताबों के पन्नों में मृतक निदेशक की आत्मा चिपकी हुई मिल गई। यमदूत ने प्यार से उसे किताब के पन्नों से छुड़ाया और धर्मराज के सामने पेश किया। पेश होने पर आत्मा से पूछा गया, आत्मा, बतलाओ कि आखिर वहाँ चिपक कर तुम और क्या करना चाहती थी? आत्मा रोते–गिड़गिड़ाते बोली, हे धर्मराज! मैंने सारी उम्र नवयुवकों को नौकरी के लिए उपयोगी शिक्षा दी। इस शिक्षा से नौकरियाँ तो प्राप्त की जा सकती हैं—परन्तु उनमें इनसानियत के लिए उपयोगी शिक्षा का अभाव रहता था। नौकरियों में आत्मा को बेचना पड़ता है। आत्मा बेच दी तो स्वाभिमान जाता रहता है। इंसान का स्वाभिमान चला गया तो सब–कुछ चला गया। मुझे अब ज्ञात हुआ कि मुझे मेरे बेटे को आत्मा बेचनी नहीं सिखानी है, समय बेचना वह भले ही सीख जावे। अतः आपसे अनुरोध है कि मुझे सिर्फ एक वर्ष (Special Extraordinary) प्रवास की सुविधा दी जावे।

धर्मराज ने हालत और परिस्थितियों की नजाकत देखते हुए, आज की शिक्षा की उपयोगिता में नौकरी के अलावा इनसानियत के बीज बोने के लिए, भगवान् विष्णु के यहाँ स्वीकृति के लिए फाइल भिजवा कर, पास खड़े सभी यमदूतों को चकित कर दिया।

औसतन 80 साल की जीवन-यात्रा बहुत लम्बी होती है जिसका कम से कम एक तिहाई हिस्सा आज के प्रतियोगी-स्पर्धा शिक्षा-काल में निकल जाता है, क्या यह विडम्बना की बात नहीं है? इतना बड़ा समय सिर्फ शिक्षा, और वह भी स्कूली, कॉलेज और कोचिंग शिक्षा में निकाल देना समझदारी तो नहीं होगी। इस पर जरा ध्यान देने और सोचने की आवश्यकता है।

शिक्षा की पूर्णता नौकरी के लिए नहीं है, बल्कि शिक्षा की पूर्णता जीवन के उद्देश्य को समझने के साथ उसे पूरा कर लेने की योजना बना कर, जीवन का लक्ष्य तय करने में है। जीवन का लक्ष्य तय करना सबसे कठिन काम है। योजना बनाना और उस पर फैसला लेकर समय का प्रबन्धन करके लक्ष्य पर पहुँचना ही शिक्षा की पूर्णता होगी। शिक्षा की पूर्णता कोरी स्कूली शिक्षा ही नहीं, अधिक व्यवहार अनुभव के साथ पूर्णता का फार्मूला कहाँ से प्राप्त करें, कैसे पायें यह फार्मूला? बस, यही मूलभूत उद्देश्य शिक्षा का और जीवन की यात्रा का होना चाहिए। सिर्फ गरीब रह कर, बड़ी नौकरी हासिल कर, पूर्ण जीवन बिता देना सिर्फ शिक्षा का उद्देश्य नहीं रह जाता है। जीवन में बहुत-कुछ और भी है, इसमें हँसी-खुशी से जीना ही इसका मूल उद्देश्य होता है। इसी में फार्मूले की कारगरता है।

क्या आपको यह मालूम है?

Do you know this?

राजस्थान राज्य के RPMT-2004 इम्तिहान में उपस्थित होने वाले किशोरों की तादाद 27,500 के लगभग थी, जिनमें 80 प्रतिशत अंक वाले नौजवान युवकों की संख्या लगभग 8 से 9 हजार थी, यानी 33%, जबकि सरकारी कॉलेजों में दाखिले के लिए सिर्फ 600 सीटें उपलब्ध थीं। अब आप स्वयं अंदाजा लगा सकते हैं कि 80 फीसदी से ऊपर अंक हासिल करने वाले नौजवानों में से कितनों को दाखिला नहीं मिल पाया! यही स्थिति लगभग सभी राज्यों और प्रतियोगी परीक्षाओं की थी।

क्या आपको यह तथ्य भी मालूम है?
Do you also know this fact?

केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड (सीबीएससी) की आल इंडिया प्री–मेडिकल परीक्षा (सीपीएमटी)–2005 में 2 लाख 31 हजार 370 छात्रों में से 17 हजार 108 छात्रों ने सफलता हासिल की। इनमें वो विद्यार्थी भी शामिल हैं जिन्होंने वर्ष 2004 में भी यह परीक्षा दी थी, जिनकी तादाद भी लगभग 50% थी। सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थी सिर्फ 7.40 प्रतिशत रहे, जिनकी कि अन्तिम परीक्षा होनी अभी शेष है। यानी कि कड़ी मेहनतभरा और कठिनाईपूर्ण लक्ष्य, परन्तु सफलता का आँकड़ा कितना कम!

क्या आपको यह भी मालूम है?
Do you know this also?

मेडिकल, इंजीनियरिंग प्रवेश इम्तिहानों में कामयाब होने वाले विद्यार्थियों में लगभग आधे (50%) विद्यार्थी ऐसे होते हैं, जिन्होंने 12वीं कक्षा पास करने के बाद, इन प्रवेश इम्तिहानों में सफलता हासिल करने के लिए दो या तीन बार से अधिक अपना भाग्य अजमाया होता है। यानी कि इन परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत से एक इसी लक्ष्य को प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को दो या तीन अमूल्य वर्षों का भीषण नुकसान! क्या उसको पूरी जिन्दगी में पछतावा नहीं रहेगा? निश्चित ही रहेगा—परन्तु, इसका अन्दाजा उन्हें तब लगेगा जब वे अपनी जिन्दगी के आखिरी पड़ाव पर होंगे अथवा उन्हें किसी सरकारी पद पर प्रमोशन के लिए अगले दो–तीन साल तक और इंतजार करना पड़ेगा।

असफलता का मतलब है—प्रयासों में गलतियाँ।

—डा. राम बजाज

क्या आपको मालूम है कि इसके पीछे क्या कारण हैं?
Do you know, what are the reasons behind this?

ये सामान्यतः वे विद्यार्थी होते हैं, जो कि दूसरों की भेड़चाल चलते हैं और जिन्दगी के इन दो–तीन बहतरीन सालों की अहमियत का पता जिन्हें नहीं होता। साथ में इन सालों में व्यय किए गए धन का दुरुपयोग होना अलग ही

बात होती है। जिन्दगी के इन दो महत्त्वपूर्ण वर्षों को बचाने के लिए एक ही उपाय है कि अगर आपको प्रवेश इम्तिहान देना है तो 10वीं क्लास के साथ–साथ इन प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी भी करें और उसी साल प्रयत्न करके सफलता मिलती है तो अच्छी बात है, नहीं तो अन्य रास्ता चुनने का विकल्प पास में रखें।

समय आपके पास जीवन का सुनहरा सिक्का है।

—डा. राम बजाज

समय अनमोल है। खास कर विद्यार्थी–जीवन का समय तो केरियर की आधारशिला होता है। इस दौरान यदि समय का ठीक ढंग से प्रबन्धन किया जाए तो इसके दीर्घकालीन बड़े सकारात्मक नतीजे सामने आते हैं। ऐसा न होने पर बाद में पछताना पड़ता है। इसके लिए सबसे पहले तो इस नजरिये से समझने की कोशिश करें कि समय के प्रबन्धन के साथ–साथ स्वयं को भी व्यवस्थित करना सीखना पड़ता है।

इनसान को परिणामों को देख कर, समझ कर अपना कदम तय करना पड़ता है। नहीं तो अनिर्णीत परिणामों की जंजीर लम्बी हो जावेगी।

—डा. राम बजाज

एक केरियर—एक नौकरी का सिद्धान्त गलत है।
Principal of one career & one service is wrong.

उपरोक्त आँकड़ों से कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि किसी एक केरियर के पीछे अपना सब–कुछ दाँव पर लगा देना अब व्यावहारिक नहीं रह गया है। यह व्यावहारिक था, लेकिन तब ही तक, जबकि रिक्त पदों को भरने के लिए पर्याप्त संख्या में योग्य उम्मीदवार या विशेष कोर्स हेतु अभ्यर्थी विद्यार्थी नहीं मिलते थे। अब, जबकि एक खाली पद या थोड़ी–सी प्रतियोगी सीटों की संख्या पर, एक से बढ़ कर एक योग्य उम्मीदवार किशोर लाइन में खड़े मिलते हैं तो ऐसे में एक केरियर के पीछे पड़े रहना कतई बुद्धिमानी का काम नहीं है। जो युवा कोचिंग क्लासेज के माध्यम से या स्वयं के अध्ययन से ऐसा कर रहे हैं, उनमें से अधिकतर को हाथ मलने के अलावा कुछ नहीं मिलता।

महाभारत के चर्चित प्रसंग में गुरु द्रोण कौरव और पांडव राजकुमारों की

धनुर्विद्या की परीक्षा एक पेड़ पर रखी मिट्टी की चिड़िया पर निशाना साधने से पहले एक–एक कर सभी से प्रश्न पूछते हैं, तुम्हें क्या दिखाई देता है? एक–मात्र अर्जुन ही अपनी बारी आने पर उत्तर देते हैं, मुझे सिर्फ चिड़िया की आँख दिखाई पड़ रही है। गुरु द्रोण की परीक्षा में सिर्फ अर्जुन ही पास होते हैं।

यह उदाहरण अकसर सभी इन कोचिंग क्लासेज में देते हैं। लगन, लक्ष्य और ध्येय का इससे बड़ा और बढ़िया उदाहरण ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगा। लेकिन ईमानदारी से परखें तो आज की परिस्थितियों और वातावरण में लक्ष्य की यह लगन व भेड़चाल कितनी ज्यादा घातक दिखती है? क्योंकि एक–दो साल की कठिन कोचिंग क्लासेज के बाद वास्तविक परिणाम सिर्फ 0.0001 प्रतिशत के हक में जाता है। फिर तो भला बाकी 99.9999 प्रतिशत युवा डिप्रेशन, टेन्शन के शिकार तो हो ही जाते हैं। कुछ युवा तो ऐसी हालत में दिमागी तौर पर बेहद डिस्टर्ब हो जाते हैं और जीवन को रेखा के दूसरी पार तक ले जाने (मृत्यु) की भी सोच लेते हैं।

इसका मुख्य कारण यह है कि आप जिस लक्ष्य को देख रहे हैं, उस लक्ष्य पर आपके अलावा भी सैकड़ों–हजारों की नजर है। **आप अकेले अर्जुन नहीं हैं।** आज अर्जुनों की भीड़ लगी हुई है। इसलिए बात सिर्फ चिड़िया की आँख देखने से बनने वाली नहीं लगती।

एक नौकरी या एक केरियर के पीछे पड़े रहने का सिद्धान्त अब बेहद पुराना और बासी हो गया है, क्योंकि यह व्यावहारिक तौर पर खरा नहीं रह गया है। एक केरियर के पीछे अपनी पूरी ताकत लगा कर असफलता पाना, नए सिद्धान्त में उतना नहीं है। इसके बदले में विभिन्न चिड़ियाओं पर एक साथ नजर रख कर और परिस्थितियों के हिसाब से चयन करने का सिद्धान्त अपनावें तभी विभिन्न चिड़ियाओं में से एक पर निशाना साधने में सफल हो पायेंगे।

ध्यान रखें कि काबिलीयत और कामयाबी में योग्य इंसानों का मशविरा जितना अधिक फायदेमन्द होता है, अयोग्य और नाकामयाब लोगों का साथ रहना उतना ही ज्यादा नुकसानदायक होता है।

30 अप्रैल, 2005 को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सीनियर सेकण्डरी वाणिज्य वर्ग के परिणामों की ओर झाँकें। इस परीक्षा में योग्यता सूची में प्रथम आने वाले अक्षित खालरका, नागौर ने 591/650 अंक

(90.92%), द्वितीय स्थान पर निर्मल जैन ने 584/650 (89.84%), द्वितीय स्थान पर ही अभिषेक जैन, नागौर ने 584/650 (89.84%) अंक, तृतीय स्थान पर आकाश फोफलिया, जौधपुर ने 580/650 (89.23%) अंक, दसवाँ स्थान पाने वाली लड़की कु. रश्मि माखीजा, बीकानेर ने 569/650 (87.75%) प्राप्त किए।

ऐसे दस स्थान पाने वाले विद्यार्थियों के बीच कितने थोड़े अंकों का अन्तर है। इसका मुख्य कारण यही है कि आप जिस लक्ष्य को देख रहे थे, आपके अलावा भी हजारों विद्यार्थियों की नजर भी उस पर थी। कोई फर्क नहीं पड़ता कि प्रथम और दूसरे रेंक वाले विद्यार्थी के बीच मात्र 7 अंक का फर्क था। यहाँ सवाल यह नहीं है कि अक्षित खालरका, निर्मल एवं अभिषेक जैन से 7 अंकों की अधिकता के मापदण्ड में ज्यादा जानते हैं। एक ही वाणिज्य विषय की परीक्षा देने वाले विभिन्न छात्रों में से किसी भी समस्या को हर औसत विद्यार्थी हल तो कर सकता है, लेकिन अक्षित खालरका को निश्चित समय–सीमा (तीन घण्टे की परीक्षा) के अन्दर 7 नम्बर अधिक लेने में, विशेष पैमाने के आधार पर प्रथम स्थान पर घोषित किया गया है। यानी ऐसा कुछ भी नहीं है कि जिसे करने वाले अन्य विद्यार्थी सफल न हों। जिन विद्यार्थियों ने कम नम्बरों से सफलता प्राप्त की है, उनके पीछे यही कारण है कि उससे सम्बन्धित अभ्यास व परिश्रम अधिक मात्रा में नहीं किया गया था तथा अक्षित खालरका पढ़ने की कला में द्वितीय स्थान वाले व अन्य विद्यार्थियों से बेहतर थे।

इसलिए अपनी मंजिल पाने के लिए केवल उन्हीं लोगों से सलाह–मशविरा करें, जो सिर्फ उस क्षेत्र के सफल इनसान होते हैं। अन्य क्षेत्रों के सफल इनसानों के समीकरण बराबर नहीं होंगे, क्योंकि वो अपने क्षेत्र के महारथी होते हैं।

एक बार में सफल न हों तो एक बार और कोशिश करें,
परन्तु उसके बाद कोई दूसरा रास्ता बदल लें।

—राम बजाज

केरियर में कामयाबी किसी की बपौती नहीं है, जाहिर है कि आप भी इसे प्राप्त कर सकते हैं। यह कतई जरूरी नहीं है कि आप थोड़े–से या फिर प्रथम प्रयास में मंजिल पा लेने में कामयाब हो जावेंगे। हो सकता है कई बार असफलता का मुँह देखना पड़े। परन्तु यह तब होता है जब आपकी योजना

और निर्णय में कहीं त्रुटि रह गई हो। इसका मतलब यह नहीं है कि आप असफलता से घबरा कर बिना सोचे–समझे रास्ता बदल दें। असफलता से घबराने की जरूरत नहीं, फिर से रिवाइज्ड प्लानिंग और निर्णय की जरूरत होती है। हाँ, हर नाकामयाबी से सबक जरूर लीजिए कि गलती और चूक कहाँ हुई है? उसको सुधारते हुए फिर एक बार लक्ष्य को साधने की पूरी कोशिश करें—इस बार लक्ष्य का बिन्दु आपको साफ नजर आयेगा। इस बार चूक और गलती नहीं करेंगे, क्योंकि मनुष्य एक गलती कर रहा हो और उसमें सुधार नहीं कर रहा हो तो वह दूसरी और तीसरी गलती कर रहा होता है।

शतरंज के खेल में भाग्य नाम की कोई चीज नहीं होती।

—राम बजाज

सपना डाक्टर बनने का है तो क्या करना होगा?

If you have a dream for a Docter than what is to do?

प्री–मेडिकल टेस्ट (पीएमटी) की परीक्षा में बैठने वाले बारहवीं के किशोर के लिए यह समय कठिन इसलिए होता है कि पीएमटी के इम्तिहान के लिए 12वीं बोर्ड की परीक्षा के तुरन्त बाद इसकी तैयारी में जुट जाना पड़ता है। हालाँकि उन्हें इसमें बोर्ड की तैयारी का अच्छा–खासा लाभ भी मिलता है, क्योंकि उन्हें नए सिरे से तैयारी आरम्भ नहीं करनी पड़ती। खूबियों वाले किशोर अपनी पूर्व–तैयारी को बस पीएमटी के ट्रेक पर डाल कर अपना स्थान पक्का करते हैं। अक्लमन्द छात्र डाक्टर बनने के लिए इस मुश्किल टास्क को अपनी प्लानिंग करके इतना आसान बना लेते हैं कि पीएमटी की परीक्षा उनके लिए एक शतरंजी खेल की बाजी के समान बन जाती है जिसमें आप ऐसी दुनिया के स्वामी होते हैं, जहाँ मोहरे आपकी मर्जी के मुताबिक चलते हैं। शतरंज के खेल में भाग्य नाम की कोई चीज नहीं होती। जो अच्छा खेलता है—वही जीतता है। यही बात इस पीएमटी परीक्षा में लागू होती है।

एक ही परीक्षा देने वाले हजारों विभिन्न विद्यार्थियों में से किसी भी प्रश्न–पत्र को हर औसत विद्यार्थी हल तो कर ही सकता है। लेकिन अक्लमन्द किशोर निश्चित समय–सीमा (तीन घण्टे) के अन्दर, अधिक से अधिक पीएमटी के प्रश्नों को हल करने में कामयाब होता है। उसे ही विशेष पैमाने के आधार पर वरीयता में उत्तीर्ण घोषित किया जाता है।

यानी ऐसा कुछ भी नहीं है कि जिसे करने में आप सफल न हों। जो लोग असफल होते हैं उसके पीछे कारण यही है कि उससे सम्बन्धित अभ्यास, योजना और उनकी सफल क्रियान्विति करने में आपने अक्लमन्दी की मात्रा को कम इस्तेमाल किया होगा। लेकिन, आप भी निरन्तर अभ्यास व थोड़ी दिमागी मेहनत व कसरत से औरों से और दो–चार कदम आगे बढा सकते हैं।

मरने का वादा नहीं निभाना है।

हिन्दुस्तान में सरकारी नौकरी में रिटायरमेंट से पहले अगर मृत्यु हो जाए तो उसके बदले में, उसी परिवार के एक सदस्य को नौकरी में रख लिए जाने का नियम है। डॉ. अविनाश अपना मेडिकल अवकाश बढ़ाए चले जा रहे थे। दिनोंदिन शरीर कमजोर होता जा रहा था। दवाइयाँ काम नहीं कर रही थीं। उन्हें लगा कि साँसें और अधिक लम्बी नहीं खिंच पाएंगी। डाक्टर अविनाश के चेहरे पर निराशा के भाव भी बढ़ने लगे। बड़ा लड़का सी.पी.एम.टी. का तीसरी बार इम्तिहान दे रहा था। अच्छे कोचिंग संस्थान का कोई फायदा नहीं हो रहा था। दो अबोध बच्चियाँ भी घर में थीं। उसने अपने लड़के को पास बुला कर कहा, देखो बेटे, मुझे पता है कि तुम्हारी पढ़ाई में कोचिंग सेन्टर का कोई महत्त्व तब तक नहीं है, जब तक तुम स्वयं उस पर मनन नहीं करते। अधिकांश और महत्त्वपूर्ण समय तो तुम कोचिंग सेन्टर में ही जाया कर रहे हो। इससे अच्छा है कि तुम इस बार बिना कोचिंग सेन्टर के पढ़ाई करो। तुम्हें शायद पता नहीं है कि मेरे मरने के बाद मेरी जगह तुम्हारी अनुकम्पा–नियुक्ति हो सकती है, सरकारी नौकरी मिल सकती है—जिसकी अहमियत क्या है, तुम स्वयं आज के वातावरण में समझ सकते हो। लेकिन इसके लिए वादा करो कि इस बार तुम मुझे अच्छे नम्बरों से पास होकर मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेकर बताओगे। बेटे ने खूब मेहनत की। वह उत्तीर्ण की सूची थामे पिता के सामने खड़ा था जिसमें उसका प्रथम 100 विद्यार्थियों में स्थान था। भावावेश में वह पिता से बोला, पिताजी, मैंने अपना वादा निभा दिया है, लेकिन इसके बदले में मुझ आपकी जिन्दगी नहीं, आपके मार्गदर्शन की जरूरत है। पिता की आँखें नम हो गईं और उसने बेटे को गले लगा लिया।

लक्ष्य की होड़ समाप्त नहीं होनी चाहिए, लक्ष्य का संकल्प यदि पक्का है, तो मंजिल दूर नहीं है।

—डा. राम बजाज

कामयाबी से बाहर कैसे होता है?

पीएमटी में जिस विषय को लेकर आपके दिमाग में भय बैठ जाता है कि मैं इसमें होशियार नहीं हूँ अथवा कमजोर हूँ, आप उस विषय से दूर भागने लगते हैं और अन्त में लम्बे समय के अन्तराल के बाद वह विषय आपकी सफलता की लिस्ट से बाहर हो जाता है। यह तो हुई अभ्यास की बात—परिश्रम की बात।

12वीं बोर्ड की परीक्षा के बाद पीएमटी के लिए अधिक समय नहीं बचा होता है। ऐसे में कुछ छात्र तो यहाँ तक सोचने लगते हैं कि वे इसमें सफल नहीं हो पायेंगे। लेकिन यदि आप थोड़े परिश्रम व लगन से योजना के अनुसार तैयारी करेंगे तो पीएमटी का शतरंजी किला भेदना आपके लिए कोई बड़ी बात नहीं होगी।

हमेशा अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करें और उसके लिए व्यवस्थित होकर काम करें। समय को बढ़ाया तो नहीं जा सकता। सफल से सफल होने वाले विद्यार्थियों के पास भी दिन के चौबीस घण्टे ही होते हैं, परन्तु वक्त को संभाल कर, बाँट कर काम लेने की कला ही उनको कामयाबी दिलाती है। पीएमटी के सिलैबस के हर हिस्से को वे इस तरह बाँटते हैं कि हर हिस्से को उचित समय मिल जाए। तैयारी करते हुए अपना लक्ष्य व समय–सीमा हमेशा ध्यान में रखें। प्रत्येक विषय को आवश्यकता के अनुसार बाँट लें। इससे आप विस्तृत सिलैबस को निश्चित समय के भीतर पूरा कर पाएंगे।

पीएमटी पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए ऐसी चीजों की विषयबद्ध सूची दी जा रही है जिन्हें दोहराना अतिलाजिमी है। कोरा पसीना बहाने से पीएमटी की परीक्षा में सफलता नहीं मिलती—सफलता के लिए फिजिक्स पढ़ने की कला ही अन्तिम कामयाबी दिलाती है।

महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि आप कितनी मेहनत करते हैं बल्कि यह है कि आप कितने मार्क्स हासिल कर रहे हैं।

—डा. राम बजाज

कोरा पसीना बहाना बेकार है

पसीना आपके शरीर के तापक्रम को नियंत्रित करता है, यह तथ्य शायद आपको ज्ञात होगा। शरीर की त्वचा के अंदरूनी भाग में लाखों बेहद सूक्ष्म स्वेद ग्रन्थियाँ (स्वेट ग्लैन्ड्स) होती हैं। पसीने की ग्रन्थियाँ दो प्रकार की होती हैं, जिन्हें एक्राइन और ऑपोक्राइन ग्लैन्ड्स कहा जाता है। एक्राइन ग्लैंड्स मानव–त्वचा के हर भाग में पायी जाती हैं, जो सबसे ज्यादा मात्रा में पसीना पैदा करती हैं। वहीं ओपोक्राइन ग्रन्थि मूल रूप से दोनों बाँहों की बगलों और प्रजनन अंगों के आस–पास स्थानों में पायी जाती है। ये दोनों ग्रन्थियाँ अधिक परिश्रम करने और बाहरी तापक्रम के प्रभाव के कारण सक्रिय हो जाती हैं। इसके अलावा क्रोध, भय, उत्तेजना आदि के कारण भी ये ग्रन्थियाँ सक्रिय हो जाती हैं। इन ग्रन्थियों से पैदा पसीने में कोई दुर्गंध नहीं होती, किन्तु जब पसीना चमड़ी की सतह पर पहुँचता है तब, यहाँ चमड़ी पर स्थित जीवाणुओं की मौजूदगी के कारण पसीने में दुर्गंध पैदा हो जाती है। किन्तु पसीने का काफी मात्रा में और ज्यादा देर बहना नुकसानदेह है, अतः ऐसी स्थिति में ज्यादा पानी के साथ मामूली नमक फायदेमन्द रहता है, परन्तु अपने चिकित्सक की राय के अनुसार ही। इसी तरह पीएमटी परीक्षा के लिए बहुत ज्यादा कड़ी, लक्ष्यहीन मेहनत नुकसानदायक हो सकती है। एक अच्छी योजना के साथ कार्य शुरू करना, समझो आपका आधा कार्य सम्पन्न हो गया है। पीएमटी परीक्षा का कार्य विराट् व कठिन भले ही नजर आये लेकिन इसे समय के अनुसार 10वीं क्लास से ही छोटे–छोटे टुकड़ों में बाँट लें तो यही काम आपको सरल लगने लगेगा।

पीएमटी की तैयारी के सुझाव–संक्षेप में

(1) मल्टीपल च्वाइस प्रश्नों का निरन्तर अभ्यास।

(2) प्रश्नों को हल करते हुए समय का ध्यान रखें। एक प्रश्न को हल करने में औसतन तीस सेकेण्ड से ज्यादा नहीं लगे।

(3) तुक्के लगाने की प्रवृत्ति से बचें।

(4) स्टडी मैटीरियल में उन प्रश्नों पर निशान लगा दें, जिन्हें आप हल नहीं कर पाये। रीविजन के समय इन्हीं सवालों को हल करें।

(5) मुश्किल चीजों के फार्मूलों के छोटे–छोटे चार्ट बनाएँ।

(6) एक ही स्टडी मैटीरियल से तैयारी करें। बहुत–सी किताबों से तैयारी ना करें।

(7) पिछले वर्षों के मॉडल व वास्तविक प्रश्न–पत्रों को हल करना न भूलें।

(8) विषय से सम्बन्धित चीजों की शार्टलिस्ट (Short List) भी तैयार करना, जो आपको रीविजन के समय बहुत उपयोगी होगी।

फिजिक्स

फार्मूले, खोज, खोजकर्ता का नाम, वैल्यूज इत्यादि। सभी लाज (Laws) भी यूनिट्स।

केमिस्ट्री

एलायज, नेम्ड रिएक्शंस, ओस, मिनिरल्स, वैरियस प्रोसेसेज, केमिकल स्ट्रक्चर्स, फार्मूले आदि। सभी लाज (Laws) भी यूनिट्स।

बॉयोलोजी

क्लोरल फार्मूले, साइंटिस्ट्स, डिस्कवर्स, फादर्स आफ वैरियस फील्ड्स आफ फ्रूट्स, इन फ्लेरेंसेज, डिजीजेज, जीन इंटरएक्शन आदि।

परन्तु एक बात साफ है कि ऐसा शैक्षिक पाठ्यक्रम व्यक्तियों को क्या बनाता है? डाक्टर, इंजीनियर या प्रबन्धन का स्नातक? हमें तो उस डाक्टर या इंजीनियर या प्रबन्धक की जरूरत है, जो पहले इनसान हो, फिर डाक्टर या इंजीनियर हो। मानवता व नैतिकता रहित ऊँचे ओहदों की कोई जरूरत नहीं। यह सब तभी संभव है जब हम वर्तमान शिक्षा पद्धति को मात्र पाठ्यपुस्तकों के सीमित दायरे से निकाल कर, उसे जीवनदायी तत्त्वों के साथ गहराई से जोड़ सकें। तभी तो छात्रों को नैतिक शिक्षा रूपी जन्मघूंटी पिलाई जा सकती है। नैतिक शिक्षा नागरिक शास्त्र की आत्मा है। दुःखद स्थिति यह है कि अच्छाइयों की अपेक्षा हम दूसरों से करना चाहते हैं। स्वयं बदलने की कोशिश नहीं करते। इसीलिए नैतिक शिक्षा स्कूलों में कोरी पढ़ने–पढ़ाने का विषय बन कर रह गई है। जरूरत है स्वयं को नैतिक बनाने की, उसके बाद नैतिक शिक्षा को स्कूल में पढ़ाने की जरूरत ही नहीं रह जायेगी। नैतिक शिक्षा वह शिक्षा है जो इनसान को आचरण सम्बन्धी ज्ञान कराती है तथा जो सही और गलत का बोध कराती है।

To get 80/100 marks in the examination is
a game of calculated moves.

— Dr. Ram Bajaj

What the formula of getting 80/100 marks ?
80/100 नम्बर प्राप्त करने का फार्मूला क्या है ?

दरअसल हमारा दिमाग एक बड़ी लाइब्रेरी है, जहाँ चीजें अगर व्यवस्थित हों तो ढूँढ़ना (याद करना) आसान होता है।

टूडेज चाणक्य, नई दिल्ली संस्थान व डा. ब्रुना फास्ट के मुताबिक—

(1)	जो पढ़ते हैं, उसका याद रखते हैं—	25%
(2)	जो सुनते हैं, उसका याद रखते हैं—	35%
(3)	जो देखते हैं, उसका याद रखते हैं—	50%
(4)	जो कहते हैं, उसका याद रखते हैं—	60%
(5)	जो करते हैं, उसका याद रखते हैं—	75%
(6)	और जो पढ़ते, सुनते, देखते, कहते तथा करते हैं, उसका याद रखते हैं—	95%

उपरोक्त तथ्यों को जरा विस्तार से सोचें तो क्रम संख्या 5 व क्रम संख्या 6 के अनुसार हमें जिन्दगी में किसी भी अध्ययन, घटना अथवा संस्मरण का 75 से 95% तक याद रह जावे तो बाकी प्रतिशत विद्यार्थी या इनसान अपने रीविजन द्वारा याद रख सकता है। यही 75% से 95% याददाश्त का फार्मूला आपको 80/100 अंक दिलाता है।

किसी भी इम्तिहान के लिए यही क्रम संख्या 5 व क्रम संख्या 6 ही कामयाबी दिलाती है।

अब सवाल यह है कि 75 प्रतिशत से 95 प्रतिशत याद कैसे रखें?
Now the question is that how to remember 75% to 95% of the Contents?

बड़ा आसान और सीधा जबाब है, किसी भी कार्य को अगर हम हाथ से कर लें तो हमें 75 प्रतिशत तक याद रह सकता है। बाकी 20 प्रतिशत हमें पढ़ने,

सुनने, देखने और खुद के दूसरे मित्रों को समझाने पर याद रह सकता है। यह आसान फार्मूला आप पीएमटी में आजमा कर देखें—सफलता आपके कदम चूमेगी।

इसको आजमाने के लिए फीजिक्स, केमिस्ट्री और बॉयोलोजी के सभी सिद्धान्त और नियमों की अपने घर पर प्रैक्टिकल प्रयोगशाला बनानी पड़ेगी, जो कोई मुश्किल काम नहीं है। विज्ञान के किन्हीं भी नियमों का Proof (निष्कर्ष) किसी भी Experiment और प्रैक्टिकल के आँकड़े प्राप्त करके निकाला जा सकता है। एक बार हाथ से सभी विषयों और Laws को Experiment द्वारा Prove कर दें तो हमें 75 प्रतिशत याद रहेगा—जो जिन्दगी में भूलने का सवाल ही नहीं उठता। ध्यान रहे कि नियमों और Laws की थ्योरी की जानकारी जरूरी है, सिर्फ प्रैक्टिकल और Experiments से काम नहीं चलेगा।

चार साल नौ महीने देरी से शिक्षा शुरू की

महान् दार्शनिक सुकरात के पास एक महिला आई और पूछा, गुरुदेव, अपने बच्चे की शिक्षा कब से आरम्भ करूँ?

बच्चे की उम्र क्या है? —सुकरात ने पूछा।

चार वर्ष, स्त्री ने सरलता से जवाब दिया।

तब तो आप चार वर्ष 9 माह बच्चे को शिक्षा देने में पीछे रह गईं, सुकरात ने कहा।

सुकरात ने उसका समाधान यों किया। गर्भ में ही माता के आहार–विहार, आचरण आदि से बच्चे के संस्थान बनने आरम्भ हो जाते हैं।

इसलिए बच्चे की शिक्षा व उसके केरियर का चुनाव आरम्भ से ही कर देना चाहिए। आधी–अधूरी योजना के बूते पर किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करना, समय की बरबादी के अलावा कुछ भी नहीं। इन परीक्षाओं में सफल होना असंभव कतई नहीं है। माँ–बाप और मार्गदर्शक वह इनसान होता है जो क्षमता और योग्यता को सही दिशा देने का काम करता है और उसके केरियर का चुनाव कच्ची उम्र में ही तय कर देता है।

प्रयोगशाला की आधारशिला कब रखें?
When the base of the foundation should be laid?

8वीं क्लास के परिणामों के बाद आपकी संतान और आपको तय करना है कि कौनसे केरियर का चुनाव करना है। अगर एक बार आपने दृढ़ निश्चय कर लिया कि डाक्टर बनाने का सपना पूर्ण करना है तो आपकी नींव की आधारशिला 9वीं कक्षा में आते ही बन जानी चाहिए। एक बार आपने अपना लक्ष्य बना लिया तो योजना के मुताबिक भौतिक शास्त्र, केमिस्ट्री और बॉयलोजी के छोटे–छोटे Experiments आप घर पर करना शुरू कर दें। किसी भी विज्ञान विषय के प्रैक्टिकल में बहुत ज्यादा खर्च नहीं होता और ज्यादा समय भी बरबाद नहीं होता। अगर एक बार हाथ से कोई भी विज्ञान का Experiments कर लेंगे तो वह आपको जिन्दगी–भर आपकी याददाश्त में जमा रहेगा।

बोनसाई क्या है? What is Bonasai?

बौने (ओछे कद) के पड़ों को विकसित करने और उगाने की कला को बोनसाई कहते हैं। बोनसाई के नमूने साधारण पेड़ ही होते हैं, न कि आनुवंशिक रूप से बौने वृक्ष। इस प्रक्रिया में नर्सरी से चुने हुए गमलों में पेड़ों को लगा कर ठीक से कांट–छांट कर उनकी शाखाओं को तारों से बांध कर उनके आकार और विकास को नियंत्रित किया जाता है ताकि उन्हें बौना बनाया जा सके। वास्तव में बोनसाई एक जापानी शब्द है, जिसका मतलब होता है पौधों से सजी हुई ट्रे। इन पौधों को उनकी जाति और जड़ों की बढ़त के हिसाब से प्रति एक साल से पाँच साल के दौरान दूसरे गमलों में बदला जाता है। इससे पहले इस प्रक्रिया में जड़ों की नियमबद्ध छंटाई–कटाई कर पेड़ की वृद्धि को रोक कर उसके आकार को छोटा किया जाता है। इस तरह पेड़ एक मनचाहे छोटे बौने पौधे का रूप धारण कर लेता है। अन्य पौधों की तरह इसे भी पानी और अन्य द्रव्य खाद आदि दी जाती है। छोटे आकार को 5 सेमी से 15 सेमी तक ऊँचे होने में 5 से 10 साल का समय होता है। एक बोनसाई का जीवन 100 वर्ष या उससे भी ऊपर हो सकता है।

जिस तरह माली बोनसाई को विकसित करने में पूरा ध्यान लगाकर, उसकी कटाई–छंटाई से उसकी जाति और गुणों से बिना छेड़छाड़ किए, भरसक–कला विकसित कर सकता है—उसी तरह माँ–बाप और मार्गदर्शक को विद्यार्थी के जीवन में 8वीं क्लास अथवा 10वीं क्लास से 80/100 मार्क्स के लिए विशेष प्रैक्टिकल अभ्यास और तीक्ष्ण बुद्धि का इस्तेमाल करना सीखाना चाहिए। शतरंज के खेल की तरह आपको उसे ऐसी दुनिया का मालिक बना देना चाहिए जहाँ मोहरे उसकी मर्जी के मुताबिक चलें, यानी 80/100 मार्क्स उसकी मर्जी के मुताबिक ही आयें।

10वीं क्लास में आने वाला औसत किशोर किसी भी विषय की समस्या हल तो कर सकता है, लेकिन जो विद्यार्थी 80/100 अंक के लिए संघर्षशील रहता है, उसे कुछ विशेष अभ्यास व तीक्ष्ण बुद्धि के इस्तेमाल से प्रैक्टिकल समस्याओं का अपनी ही प्रयोगशाला में अधिक से अधिक संख्या में समाधान करते हुए करना पड़ता है। बस, यही फर्क 80/100 अंक दिलाता है।

यानी ऐसा कुछ भी नहीं है कि जिसे करने में दुनिया के युवा सफल न हों। जो विद्यार्थी असफल होता है, उसके पीछे यही कारण है कि उसने सम्बन्धित अभ्यास व प्रैक्टिकल करके याददाश्ती की मात्रा को बढ़ाया नहीं है। क्लास या कोचिंग सेन्टर में सिर्फ सुनते हैं, जिसमें से उनको 25 प्रतिशत ही याद रहता है, जबकि प्रैक्टिकल से समस्या का निपटारा करने वाले विद्यार्थी को, कम से कम 75 प्रतिशत याद रहता है, जिसे वह काफी अरसे तक भूल ही नहीं पाता।

अपना मूल्य पहचानें Findout your Value

इन सबके लिए जरूरी है स्वयं को बुद्धिमान समझना। ऐसी विचारणा आपके लिए अत्यन्त आवश्यक है। अपनी अहमियत आपको खुद ही तय करनी होती है। आप खुद को जैसा समझेंगे, वैसा ही दूसरे आपको मानेंगे। आप सभी में कोई–न–कोई खूबी होती है। बस, उसे पहचानने और निखारने में समय लग सकता है। कई बार इसी कमी की वजह से सही अवसर से वंचित रह जाते हैं। अगर आप अपने महत्त्व को समझें और सही समय, यानी कि 8वीं क्लास

से अपनी खूबियों को निखारने लग जावें तो आप न केवल इम्तिहान में खुद को ज्यादा संतुष्ट पायेंगे, बल्कि 80/100 मार्क्स से अधिक का लक्ष्य भी प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

किसी भी पेपर करेंसी को हम कागज का टुकड़ा कह सकते हैं पर हम यह भी जानते हैं कि पेपर करेंसी की खास कीमत होती है। आप भी दूसरों की नजरों में याददाश्त के उपरोक्त तरीकों से, अपना मूल्य बढ़ा सकते हैं, यदि आपको अपना मूल्य ज्ञात हो तो। विद्यार्थी की कीमत उसके द्वारा प्राप्त अंकों से आँकी जाती है। आपमें खूबियाँ होनी चाहिए जिनसे 80/100 मार्क्स से अधिक अंक पाने की काबिलीयत हो।

12वीं क्लास तक आते–आते यह सवाल आता है कि हम दूसरे विद्यार्थियों से क्या ज्यादा जानते हैं, बल्कि सवाल यह है कि हम क्या–क्या नहीं जानते एवं जो–जो नहीं जानते हैं उनको जानने की चेष्टा करनी चाहिए। केवल आप ही जानते हैं कि आपके लिए क्या सही है और क्या नहीं। इसलिए एक बार अपना लक्ष्य तय कर लेने पर अपने–आप पर भरोसा रखें और कठिनाइयों से घबरायें नहीं।

12वीं क्लास में तो किसी भी किशोर के केरियर की ठोस नींव रखने का समय होता है। 12वीं क्लास विद्यार्थी जीवन की एक ऐसी कक्षा है जहाँ एक नक्शा तय करके, उसका ब्ल्यू प्रिंट (Blue Print) बना कर, नींव के ठोस आधार पर बुनियाद रख कर इमारत खड़ी करने का काम शुरू हो जाता है। यह समय ऐसा है जब किसी भी तीक्ष्ण बुद्धि वाले नौजवान को मार्गदर्शक की आवश्यकता सबसे अधिक होती है। कुशल मार्गदर्शक हर जगह अहमियत रखता है। 12वीं कक्षा की पढ़ाई के तरीकों में एक चूक ही उसको प्रतिस्पर्धा में पीछे छोड़ सकती है। केवल इनसान में ही यह अद्‌भुत शक्ति है कि अपनी कमजोरी को भी ताकत में बदलने के गणितीय फार्मूले का ईजाद कर सकता है।

12वीं क्लास की परीक्षा और उसके बाद मेडिकल अथवा इंजीनियरिंग की प्री–टेस्ट परीक्षाओं की तैयारी की योजना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

Read to Lead Marks

—Dr. RAM BAJAJ

नकल की नहीं, अक्ल की योजना बनाएँ।

—डा. राम बजाज

इम्तिहान और क्लास में फर्स्ट
Examination and First in Class

डैडी : बेटा, तुम्हारी क्लास में सबसे होशियार लड़का कौन है?

बेटा : जी, मि. ओलीवर सबसे होशियार है।

डैडी : अच्छा, तब तो वह क्लास में फर्स्ट आता ही होगा?

बेटा : डेडी, यह तो मैं पक्का नहीं कह सकता कि उसको क्लास में किस पोजीशन पर माना जावे, परन्तु.....

डैडी : वो भला क्यों, बेटा?

बेटा : इसमें तो कोई शक नहीं कि उसके क्लास में सबसे ज्यादा नम्बर आते हैं डैडी, और इसमें भी कोई शक नहीं कि वो नकल भी करता है, लेकिन जिस होशियारी की बात आप पूछ रहे हैं, वह यह है कि वो कभी नकल में पकड़ा ही नहीं जाता।

समाज, परिवार और स्कूल में ऐसे स्टूडेन्ट्स को आखिर क्या समझा जावे ? यदि चरित्र और नैतिकता की बात करें तो महत्त्वपूर्ण यह नहीं कि उसने क्लास में नकल करके कौनसा स्थान प्राप्त किया, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि मारे नैतिकता के नाते अगर वो फेल भी हो जाता है, तो महान् बन सकता है। आज महान् और सफल बनने के लिए गुणात्मक पढ़ाई चाहिए।

मात्रात्मक नहीं, गुणात्मक चाहिए पढ़ाई
Not quantative but qualitative study needed

आज कोई भी विद्यार्थी तभी सफलता की सीमा पार कर सकता है जबकि उसका अध्ययन और पढ़ाई–लिखाई का तरीका विशेष और विशिष्ट हो। प्रतियोगिता में सफलता के लिए जरूरी है कि सर्वप्रथम एक लक्ष्य का बेहतर और मजबूत ढंग से निर्धारण हो जाना। फिर उस लक्ष्य को पाने के लिए चयनित विषयों का सुव्यवस्थित, सकारात्मक और गुणात्मक अध्ययन किया जाना।

पढ़ाई करने का अपना ढंग और अपना तरीका होता है। प्रयोगात्मक अभ्यास से नियम और शब्द स्पष्ट होते हैं और दिमाग में हमेशा के लिए Hard Disc में स्टोर हो जाते हैं।

लेखन से प्राप्त प्रयोगात्मक ज्ञान, तीक्ष्ण, उपयोगी और दीर्घ याददाश्त बनाता है, अतः कामयाबी के लिए जरूरी है—परीक्षा–उपयोगी विषयों का क्रमवार, प्रैक्टिकल अभ्यास और उनका संक्षिप्त लेखन।

अंधेरी सुरंग में भटकने से बेहतर है कि समय रहते ही आप एक लक्ष्य निर्धारित कर लें।

—डा. राम बजाज

गुणात्मक पढ़ाई के लिए चाहिए

(1) किताबें और पढ़ाई

उच्च कोटि की किताबों का बेहतर ढंग से चयन। स्तरहीन, अप्रामाणिक, अपूर्ण पुस्तकों के अध्ययन के स्थान पर, प्रामाणिक, सही एवं सटीक तथ्यों से भरूपर किसी एक ही किताब से अध्ययन करना अतिलाभदायक होता है। अकसर विद्यार्थी तरह–तरह की किताबों को पढ़ते रहते हैं, जिससे परीक्षा के दौरान, किसी पुस्तक से क्या पढ़ा, उनको पता ही नहीं चलता और परीक्षा के दिनों में असमंजस की (Confused) स्थिति में रहते हैं। एक पुस्तक में सटीक तथ्य नहीं मिलने पर किसी अन्य प्रमाणित किताब से अलग–अलग चैप्टरों का अध्ययन करके अन्तिम निष्कर्ष एक ही किताब के आखिरी पन्नों पर लिखा जा सकता है। किताब में जगह नहीं होने की स्थिति में अतिरिक्त खाली पेज, Permanent नत्थी करने का बन्दोबस्त ही 80/100 मार्क्स प्राप्त करने में मदद करता है।

अखबार या सस्ता साहित्य की तरह सैकड़ों पन्नों की रीडिंग से दिन–भर में मात्र एक दो–सौ पंक्तियों को अच्छी तरह से पढ़ कर, जहन में उतार कर–गुनगुना कर उसे प्रयोगात्मक ढंग से विश्लेषण करके—अपना बना लेना ही सफलता के अन्तिम परिणामों में नाम अंकित कराने का बड़ा कारगर नुस्खा है। जो भी, जितना भी पढ़ा जावे, उस पर कमाण्ड प्राप्त करने की चेष्टा होनी चाहिए।

चैप्टर को अगर समझने में मुश्किलें आ रही हैं, तो अपने साथी या टीचर की मदद लेकर पूरा Concept साफ होने के बाद ही आगे बढ़ना बेहतर होगा।

महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि हम दूसरों से कितना ज्यादा जानते हैं, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि हम क्या-क्या नहीं जानते।

—डॉ. राम बजाज

(2) रेखांकन और प्रयोगात्मक पुनर्अभ्यास
Daigram & Revision with practical

पढ़ाई से प्राप्त ज्ञान को लम्बे समय तक याद रखने के लिए काफी बार रीविजन (Revision) की जरूरत रहती है। चूँकि पूरे पाठ या पाठ्यक्रम को रीविजन करना इतना आसान और सरल नहीं है, अतः अल्प समय में सारे तथ्यों के रीविजन के लिए जरूरी है कि महत्त्वपूर्ण आँकड़ों, बिन्दुओं और विचारधाराओं को रेखांकित (Underline) कर लिया जावे। रेखांकित तथ्यों को अभ्यास पुस्तिका में लिख लेना चाहिए और लिखे हुए तथ्यों को तत्काल समझकर, सदैव के लिए अपना बना लेना ही पढ़ाई करने की एक कला है। अध्ययन दीर्घकालीन हो, इसके लिए जरूरी है कि सप्ताह में एक दिन नियमित ढंग से Revision और Practical करके पुनर्भ्यास किया जावे। Diagram (चित्र) संभव हो तो जरूर बनावें। डा. ब्रुना फास्ट और टूडेज चाणक्य, नई दिल्ली के अनुसार जो विद्यार्थी यह करते हैं—उसको 75 प्रतिशत याद रख सकते हैं। बस, यही याद रखने की कला विद्यार्थी को 80/100 मार्क्स प्राप्त करने में सहायक होती है।

(3) अरुचिकर चैप्टर को रुचिकर बनावें

मनपसंद चैप्टरों का तो सामान्य ढंग से सभी विद्यार्थी अपने तरीके से गुणात्मक अध्ययन करते ही हैं, परन्तु अरुचिकर पाठों को चुनौती के रूप में ग्रहण करके उन पर अधिक समय देकर अच्छे मार्गदर्शक की सलाह लेकर, उन पर पकड़ बनाने वाला विद्यार्थी ही 80/100 मार्क्स (Marks) के काबिल होता है। अरुचिकर पाठ की पूर्ण प्रैक्टिकल जानकारी ही आपकी सफलता का पैमाना होती है। अगर इस पर पूर्ण रूप से मास्टरी करके पकड़ बना ली, तो समझो आप में आत्मविश्वास का पैमाना (Scale) बहुत ऊँचा हो जायेगा और अध्ययन सुव्यवस्थित होकर आपमें ललक पैदा कर देगा, जो आपको

80/100 से भी आगे बढ़ा देगा। वैसे भी रुचि–अरुचि व्यक्तिगत और परिस्थितिवश होती है व पूर्णतः मानसिक होती है—जन्मजात नहीं होती। बार–बार प्रैक्टिकल ज्ञान और अभ्यास से—इसमें पूर्ण रूप से निखार आ जावेगा। वैसे भी घोर प्रतिस्पर्द्धा के इस युग में हर युवक का परम ध्येय होता है—सिर्फ सफलता और सफलता प्राप्त करना, ना कि महान् विद्वान बनना। अतः लक्ष्य की प्राप्ति में अरुचिकर विषय को रुचिकर बनाया जा सकता है, भले ही चैप्टर या विषय कितना भी कठिन और मनपसन्द क्यों ना हो।

ध्यान रहे कि जब लक्ष्य निर्धारित कर लिया गया तो रुचि–अरुचि से कोई मतलब नहीं निकलता। समझ लीजिए कि उसका कोई विकल्प नहीं है। वैसे भी रेस के बीच में घोड़ा बदला नहीं जा सकता, उसकी चाल ही बढ़ाई जा सकती है।

विषय के अंश या पाठ को, उसके अर्थ को अच्छी तरह से समझ कर आगे बढ़ना चाहिए। पढ़े हुए पाठ का कुछ मिनटों तक गंभीर चिंतन–मनन करना भी सीखें। क्यों, कैसे, क्या का प्रश्न करते हुए उसका अर्थ भी ढूँढ़ना चाहिए। वर्गीकरण एवं विश्लेषण (Classification and Analysis) कर उसकी सारणी (Table) रेखाचित्र (Diagram) बनाना जरूरी है। अपने अच्छे, अनुभवी मित्रों और टीचरों से तर्क–वितर्क करके Concept को पूर्ण रूप से काच की माफिक साफ कर लेना ही एक प्रतियोगी परीक्षा में 80/100 अंक दिलाता है।

लक्ष्य हमेशा सही दिशा में निर्धारित करना पड़ता है और पाठ के अंश को मनन–चिंतन के बगैर अगर बढ़–चढ़ कर पढ़ते हो तो खोया हुआ चाँदी का सिक्का गलत जगह ढूँढ़ने के समान है। इससे क्या फायदा? सिक्का वहीं ढूँढ़ो जहाँ गिरा था। लक्ष्य गलत तय करने का क्या फायदा? कोरी किताबों को घण्टों तक सामने रख कर, एक घटिया जासूसी किताब की तरह पढ़ना, शिक्षा नहीं कहलाती।

गलत लक्ष्य चुनने में क्या फायदा?
What is the profit to select a wrong target?

शाम ढल चुकी थी, एक नवयुवक बिजली के पोल के पास, सड़क पर कुछ ढूँढ़ रहा था। नवयुवक अपनी धुन में निरन्तर मग्न था। इतने में उसके दो–तीन साथी आए और वो भी उसको किसी

कीमती चीज को ढूँढ़ने में मदद करने लगे। एक आगन्तुक ने नवयुवक से आकर कारण पूछा।

किशोर ने जबाब दिया, मेरा चाँदी का सिक्का गुम हो गया, मैं और मेरे साथी यहाँ ढूँढ़ रहे हैं। आगन्तुक भला आदमी था, वह भी चाँदी के सिक्के की तलाश में साथ हो लिया। जब उसे भी सिक्का नहीं मिला तो उसने नवयवुक से पूछा, क्या तुम्हें ठीक से याद है कि सिक्का यहीं गिरा था?

इस पर नवयुवक बोला, नहीं, गिरा तो यहाँ से काफी दूर था, परन्तु वहाँ बिजली की रोशनी नहीं है, अतः जहाँ रोशनी है वहीं तो खोजूँगा ? आगन्तुक को तर्क सुन बड़ा जोरदार झटका लगा। फिर से सभी अपने काम में तो लगे पर जगह बदलकर जहाँ गिरा था, सिक्का ढूँढ़ने लग गए, तुरन्त कामयाबी भी मिली, दिशा सही होने से।

गलत लक्ष्य निर्धारित करके किसी को कामयाबी मिल जाती तो इस संसार में शायद ही कोई विद्यार्थी होता जो अपने मकसद में नाकामयाब होता। बेमन और गलत निर्णयों पर किए गए आधे–अधूरे प्रयत्न के परिणाम कुछ निकल ही नहीं सकते। आपको वही स्थान, दिशा और सिक्के का लक्ष्य तय करना होगा, जहाँ खोया था। अंधेरे में सभी रंग एक समान, काले होते हैं। इन रंगों को तो उजाले में ही—पहचाना जा सकता है। आज का युवा एक ऐसी अंधेरी सुरंग में फंसा होता है, जहाँ भटकाव के अलावा, उसे किसी भी दिशा का ज्ञान नहीं होता। बिना सोचे–समझे कुछ भी करते रहना वर्तमान की ही हत्या है। दिशाहीन कोरी कल्पना भी भविष्य का निर्माण नहीं कर सकती। केवल वर्तमान पर आँख रखकर, जहाँ सिक्का खोया है, उस जगह पर नजर रख कर कार्य करना ही सुखद भविष्य और सफलता की कुंजी है।

(4) पुनर्मूल्यांकन एवं पुनःलेखन

एक निश्चित अवधि के बाद पढ़े–गुने, सीखे पाठ का अपने स्तर पर मौखिक एवं लेखन रूप में पुनर्मूल्यांकन भी जरूरी होता है। इससे होता यह है कि पूरे पाठ का रिविजन हो जाता है तथा कोई भी त्रुटि या कमजोरी रहने का ज्ञान भी हो जाता है। परन्तु इन सब के लिए अच्छा माहौल, आत्मविश्वास, लगन एवं निष्ठा ही नहीं, बल्कि मानसिक और शारीरिक संतुलन का होना भी अनिवार्य है।

13 घण्टे नहीं, बल्कि तीन घण्टे नियमित पढ़ाई चाहिए

80/100 अंकों के लिए 13 घण्टे की नहीं, बल्कि नियमित 3–4 घण्टे की पढ़ाई ही चाहिए जिसमें प्रैक्टिकल–प्रयोग भी शामिल हैं। अत्यधिक लम्बे समय तक किताबें लेकर बैठे रहना महत्त्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि महत्त्वपूर्ण होता है प्रयोगात्मक याद रखना। लम्बे समय तक किताबें लेकर बैठे रहने से थकान भी होती है। इसके लिए गुणात्मक तीन घण्टे की गई पढ़ाई कोई कम नहीं होती। सप्ताह में एक दिन का अवकाश भी जरूरी है ताकि अगले दिन से बिल्कुल तरोताजगी के साथ पूरे सप्ताह फिर तीन घण्टे पढ़ाई में जुट जावें।

परीक्षा नहीं, परीक्षा की योजना चाहिए।

—डा. राम बजाज

परीक्षा की तैयारी : एक विशेष स्ट्रेटेजी—80/100 अंक

किसी या सभी परीक्षाओं को आम परीक्षा समझ कर नहीं, बल्कि विशेष परीक्षा समझ कर विशेष स्ट्रेटेजी बना कर, 80/100 अंकों के लिए अलग किस्म की तैयारी करनी चाहिए। याद रखें, एक साधारण इनसान भी अथक परिश्रम और प्रयास से पहाड़ का रास्ता आसान कर सकता है। अतः तैयारी चाहे इंजीनियरिंग की हो या आई.आई.टी. स्क्रीनिंग या पी.एम.टी. की हो या फिर प्रशासनिक सेवाओं की भी क्यों ना हो, आपको अपने विशेष प्लान और विशेष स्ट्रेटेजी के साथ मैदान में उतरना चाहिए, जिसके लिए आपको चाहिए—

(1) सही दृष्टीकोण (Right Attitude)
(2) सही अध्ययन सामग्री (Right Study Material)
(3) सही पढ़ाई का तरीका (Right Study Methodology)
(4) सही मार्गदर्शक (Right Guide)

परन्तु इन सबसे महत्त्वपूर्ण है अपने शान्त स्वभाव से की गयी कोशिश व योग्यता पर पूर्ण आत्मविश्वास रखना।

विशेष बिन्दुओं पर ध्यान देने की बातें

(1) परीक्षा महत्त्वपूर्ण होने के कारण केवल एक या दो विशेष पुस्तकें व उनके साथ छोटे, बिन्दुवार नोट्स—परन्तु सभी का प्रैक्टिकल प्रयोगों द्वारा सारभूत निष्कर्ष अपने हाथ से निकालें।

(2) ताकतवर व कमजोर विषयों की पहचान करें तथा कमजोर विषयों पर अधिक ध्यान देकर, उन्हें ताकतवर की श्रेणी में ले आवें।

(3) स्टेडी मैटीरियल, आउटडेटेड न होकर परीक्षा के अनुरूप व नए हों। ऐसे प्रश्नों को महत्त्व देवें जो ज्यादा महत्त्वपूर्ण हों।

(4) समय का बँटवारा काफी सावधानी से करें।

योजना किसी भी कार्य का केन्द्रबिन्दु है।

Planning is the focal point of any work.

—डा. राम बजाज

अमल करें कार्य योजना पर
Stress on working plan and study

सिर्फ सोचने से सफलता मिल जाती तो इस धरती पर शायद ही कोई विद्यार्थी नाकामयाब होता। 80/100 अंक प्राप्त करने के लक्ष्य के पीछे सोचने और उस तक पहुँचने के बीच एक लम्बा फासला होता है। कुछ विद्यार्थी इस लक्ष्य को हासिल करने में पूर्णतः काबिल होने के बावजूद इस फासले से घबराते हैं, जिससे लक्ष्य उनसे दूर चला जाता है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पढ़ाई की योजना बनाना तो जरूरी है ही, परन्तु इससे भी अधिक जरूरी है उस कार्ययोजना पर अमल करना और उससे लगातार आगे बढ़ते रहना। फासला भले ही लम्बा हो, परन्तु अगर एक कदम आगे बढ़ा दिया है तो उतना फासला तो कम हो ही गया है, फिर एक दिन देखेंगे कि फासले और लक्ष्य के बीच की दूरी बहुत सूक्ष्म रह गई है।

निश्चय ही बेमन और आधे–अधूरे मन से किए गए प्रयासों के परिणाम भी आधे–अधूरे ही निकलेंगे। ऐसे परिणामों और कार्ययोजना की कोई अहमियत व उपयोगिता नहीं होती है।

उत्साह और आदत को लक्ष्य के साथ मिलाएँ
Enthusiasum & Habits should be mixed with Target

क्या फर्क पड़ता है—यदि समय थोड़ा आगे–पीछे होगा तो?

यदि थोड़ा पढ़ाई में समय में आगे–पीछे हो जाए तो क्या फर्क पड़ता है? सही

कहा है। क्या फर्क पड़ेगा यदि सुबह अखबार समय पर नहीं आए तो? क्या फर्क पड़ेगा अगर सुबह दूध देने वाला नहीं आए तो? क्या फर्क पड़ेगा यदि बीमार होने पर दवा सही समय पर न ली जाए तो? हवाई जहाज से कूदते समय अगर पैरासूट नहीं खुले तो क्या फर्क पड़ेगा? नौजवान दोस्तो! फर्क तो बहुत पड़ता है। जब जीवन की अन्य बातें हमारी आदत से बंधी हैं तो फिर पढ़ाई और व्यक्तित्व–विकास को भी हमें उसी तरह आदतों में शामिल कर लेना चाहिए।

'कल' को बाँध कर नहीं रख सकते
Tomorrow can't be tied up.

वाशिंगटन शहर के डाक्टर विलियम ने अपना आखिरी प्रयोग करते हुए कैन्सर की एक ऐसी दवाई का फार्मूला हासिल कर लिया था जिससे बायोटेक्नोलोजी में क्रांति का सूत्र स्थापित किया जा सकता था। उसके 25 वर्षीय पुत्र डा. हरीश विलियम ने जब अपने बाप को अत्यन्त प्रसन्न देखा तो कहा, डैडी, इस फार्मूले की जानकारी मुझे भी दे दें तो शायद इसमें कुछ आपका सहयोग कर सकूँ। बाप डा. विलियम ने अपने बेटे डा. हरीश को अगले दिन रात को फार्मूला बताने का वादा किया और जरूरी व्याख्यान के लिए अपने छोटे हवाई जहाज से न्यूयार्क के लिए रवाना हो गए। दुर्भाग्यवश उनका जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया और डा. विलियम को मरणावस्था में अस्पताल में भर्ती करा दिया गया जहाँ अपने बेटे डा. हरीश को सूचना के बाद अस्तपाल में मिलने के लिए बुलाया तो डा. विलियम ने बेटे से कहा, बेटा हरीश, अगले दिन फार्मूला बतलाने का वादा शायद मैं पूरा नहीं कर पाऊँगा, क्योंकि शायद मैं चन्द मिनिटों तक ही जिन्दा रह सकूँ—परन्तु एक बात को हमेशा के लिए गाँठ बाँध लेना कि समय को थोड़ा आगे–पीछे कर देने से बहुत बड़ा फर्क पैदा हो जाता है। दुनिया में 'कल' (Tomorrow) को बाँध कर कोई नहीं रख सकता। हालाँकि फार्मूला मेरी प्रयोगशाला में एक किताब के अन्दर लिखा है—परन्तु तुम शायद समझने में असमर्थ होओगे। मेरी स्थिति ऐसी है कि मैं इस समय फार्मूले को समझाने में असमर्थ हूँ। इनसान को

अच्छे कार्य के लिए समय को आगे–पीछे नहीं करना चाहिए, और ना ही कल के लिए टालना चाहिए।

कोई भी इनसान इतना शक्तिशाली नहीं हुआ कि वो 'कल' को जीत ले।

—डा. राम बजाज

उत्साह को बनाए रखना काफी मुश्किल है, क्योंकि जो भी कार्य हम शुरू करते हैं, उसका नतीजा फौरन मिलना मुश्किल होता है। आपको शायद जानकारी है कि चाइनीज बैंबू, माली की पाँच साल की कुशल देखभाल के बाद कुछ ही हफ्तों में बहुत तेजी से बढ़ता है। महत्त्वपूर्ण वो पहले के पाँच साल हैं जिनकी नियमित देखभाल व आदत के कारण अन्तिम कुछ हफ्तों में बैंबू काफी ऊँचा हो जाता है। हमारे माँ–बाप भी हमें पैदा करने के पहले पाँच साल, पाँव पर खड़ा करने तक उत्साह और आदत का बेमिसाल परिचय देते हैं। नए कागज पर चित्र बनाना बड़ा आसान है। परन्तु बहुत मुश्किल काम है एक बने–बनाए चित्र में बदलाव लाना। यदि शराब और सिगरेट पीना एक आदत बन गई है तो न पीना भी तो एक आदत है। हम यदि पुरानी अनचाही आदतों से छुटकारा नहीं पा सकते तो अपने उत्साह का सही इस्तेमाल करते हुए एक नई आदत डालने का प्रयास तो कर ही सकते हैं। रिसर्च और अनुभव यह कहता है कि लगभग तीन हफ्तों में एक नई आदत पनप जाती है। यानी शराब और सिगरेट को हम तीन हफ्तों तक छोड़ दें तो यह आदत छोड़ने में शुमार हो जावेगी।

इक्कीस दिन का मैजिक फार्मूला
A magic formula of 21 days.

अगर 21 (Twenty One Days) दिन तक उत्साहपूर्ण तरीके से नई आदत डालें तो यह जीवन के किसी भी क्षेत्र में एक नया मोड़ दे सकती है, फिर चाहे वह पढ़ाई के क्षेत्र में प्रतिदिन तीन घण्टे ही क्यों ना हो! अपने सपनों के लक्ष्य की कार्ययोजना के साथ तीन हफ्तों तक लगन और उत्साह के साथ पढ़ाई का कार्य आरम्भ करें तो यह हमारी आदत में शामिल हो जावेगा। अगर पढ़ाई की आदत जीवन में संचालित हो गई तो 80/100 अंक प्राप्त करने में कहाँ कठिनाई आयेगी—जरा बतलाएँ, पाँच साल का चाईनीज बैंबू भी तो हमारे

अन्दर हो सकता है। उत्साह और आदत, दोनों मिलने के बाद—लक्ष्य का बिन्दु हमें साफ दिखाई देगा, जिसको आज का अर्जुन भेद सकता है। जरूरत केवल उसके तीर को सही दिशा, आदत और अभ्यास की है।

गति के लिए गतिरोधक तोड़ना होगा।

'Break' the speed braker for the speed.

—डा. राम बजाज

अंधेरा मत ढोओ Do not lift Darkness

बात उन दिनों की है जब पृथ्वी पर पूर्ण अंधेरा था। अंधविश्वास कि 'उजाले' को चुड़ैलों की रानी ने एक बक्से में बंद कर रखा था। चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा था। अग्नि को लोग जानते नहीं थे। एक गाँव के लोगों ने निश्चित किया कि इस अंधेरे को दूर करने के लिए गाँव के सभी लोग अंधेरे को टोकरियों में भर कर उसे अपने कंधों पर ढोकर गाँव के बाहर खाई में फेंकेंगे। गाँव के सभी लोग इस अंधेरे को ढोकर, गाँव की खाई में फेंकने में लग गए। दिन, महीने, साल, युग बीत गए, लेकिन न तो उस गाँव का अंधेरा गया और ना ही अंधेरे से खाई भर पाई। साल–दर–साल गाँव का हर इनसान उस अंधेरे को ढोता रहा। अंधेरे को ढोना एक प्रथा और परम्परा बन गई। फिर एक नई पीढ़ी आई, जिसके एक नौजवान, समझदार युवक ने इस प्रथा को मानने से इनकार कर दिया। गाँव की पंचायत ने इस नौजवान को गाँव से बाहर जाने का हुक्म फरमा दिया। नौजवान ने आदेश की पालना करते हुए कहा, गाँववालो! मैं चला तो जाऊँगा, परन्तु साथ में पूरे गाँव का अंधेरा साथ लेकर जाऊँगा। गाँव वाले बोले, वो भला कैसे?

नौजवान युवक ने एक दीया, बत्ती, तेल मंगवाया और पास में पड़े दो गोल पत्थरों को आपस में जोर–जोर से रगड़ कर अग्नि पैदा की। दीया, बत्ती, तेल और अग्नि के मिश्रण से उजाला हो गया। गाँव के लोग नौजवान की तरफ आँखें फाड़–फाड़ कर देखने लगे। उससे विनती की कि गाँव छोड़ कर न जाए। उसी दिन से गाँव के सभी

लोगों ने अंधेरे को ढोना बन्द कर दिया। वो दीया जलाने की कला जो सीख गए थे।

जिस इनसान में सामान्य चीजों से कुछ नया खोजने की क्षमता होती है—वह सफल इनसान हो सकता है। गाँव के नौजवान ने अंधेरे में से उजाला खोजा। उसने सामान्य चीज में नई चीज की खोज की। हम सभी को 80/100 मार्क्स प्राप्त करने की कला आती है, लेकिन 80/100 मार्क्स के लिए उन तरीकों को खोजना जरूरी है जो आपकी किस्मत खोल दें। कभी भी, कैसे भी कदम उठाएँ, वो ठोस होने चाहिए। हमेशा उस पर अडिग रहें। दुनिया में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसने गलतियाँ नहीं की हों। किसी भी चीज की शुरुआत के लिए ठोस कदम जरूरी है। एक बार उठाये गये गलत कदम को वापिस लेने पर दोहरा नुकसान कर सकता है। अपने उद्देश्य की डगर पर छोटे-छोटे कदम रखें। बहुत-से लोग अपनी मंजिल तक इस कारण नहीं पहुँच पाते, क्योंकि वे जल्दी-जल्दी, लम्बे और बेतरतीब ऊँचे कदम उठाते हैं।

आखिर में तमाम प्रयासों के बावजूद आप लक्ष्य के करीब तो पहुँच जाते हैं, लेकिन लक्ष्य को यदि प्राप्त नहीं कर पाते, तो निराश होने की भी जरूरत नहीं। आप जिस भी स्थान पर पहुँच गए हैं वहाँ भी तो पहुँचाना किसी अन्य का लक्ष्य हो सकता है। उस स्थान से भी आपकी योग्यता एवं क्षमता को साबित करने के पर्याप्त अवसर देने वाला है। आखिर लक्ष्य की परिधि में होने के कारण यह स्थान भी तो आपके लक्ष्य के समान ही था। लक्ष्य और लक्ष्य की परिधि में ज्यादा अन्तर नहीं होता।

यह कतई जरूरी नहीं है कि आप थोड़े-से या फिर पहले ही प्रयास में मंजिल पा लेने में कामयाब हो जावेंगे। हो सकता है, कई बार नाकामयाबी का मुँह देखना पड़े, परन्तु यह तब होता है जब आपने योजना, कार्ययोजना और निर्णय में गंभीरता नहीं दिखाई हो अथवा उसमें कहीं त्रुटि रह गई हो, जिसमें एक बार फिर Revised planning और Revised निर्णय की जरूरत होती है। फिर एक बार लक्ष्य के बिन्दु पर निशाना साधें, जो आपको साफ नजर आ रहा है। आप इस बार गलती और चूक नहीं दोहराएंगे, क्योंकि बार-बार गलती

दोहराने वाला इनसान मूर्ख की श्रेणी में आता है। अध्ययन एक विशिष्ट कला है जो हर किसी में नहीं हो सकती।

लक्ष्य और लक्ष्य की परिधि में ज्यादा अन्तर नहीं होता।

—डा. राम बजाज

'The difference between the circumstance of Target and Target is not much.'

—Ram Bajaj

परन्तु अकसर इनसान अपनी होशियारी में गलती और चूक कर जाता है। एक बार गलती कर गए तो भला दूसरा मौका मिलना कोई आसान काम नहीं है।

भिखारी और हीरा

एक भिखारी को कोयले की खान के पास हीरा युक्त पत्थर मिला जिसे उसने पत्थर समझ कर उठा लिया। पत्थर को वह अपने पानी पीने वाले लोटे पर ढक्कन के रूप में इस्तेमाल करने लग गया। हाँगकाँग हवाई अड्डे के बाहर भीख माँग रहे भिखारी को इंग्लैण्ड से आए पर्यटक जौहरी ने पूछा, बोलो, इस पत्थर का क्या लोगे?

भिखारी ने यह सोचा यह मजाक कर रहा है, मुझे पत्थर तो बेचना नहीं है इसलिए उसकी कीमत सौ पौंड बतलाई। पचास पौंड लेने हैं तो मैं दे सकता हूँ। भिखारी ने समझा वह अभी भी मजाक कर रहा है और आगे बढ़ आया। अभी थोड़ी दूर चला ही था कि एक और अंग्रेज जौहरी मिल गया। उसने भी हीरे के पत्थर को पहचान लिया। उसने भी पहले जौहरी की तरह उस पत्थर का दाम पूछा। भिखारी ने पहले की भाँति उसकी कीमत एक सौ पौंड बतलाई। जौहरी ने अपने पर्स से 100 पौंड का नोट निकाला और भिखारी से वो पत्थर खरीद लिया। भिखारी ने सोचा, यह अंग्रेज ठीक मिल गया है और वापिस मुड़ कर जाने लगा, तभी उसे पहले वाला पर्यटक अंग्रेज जौहरी मिला और उस हीरे युक्त पत्थर का फिर से मोल करने लग गया। भिखारी ने कहा कि मैंने उस पत्थर को एक अन्य अंग्रेज को 100 पौंड में बेच दिया है।

पहला जौहरी बोला, मूर्ख भिखारी, तुमने बड़ी भारी गलती कर दी है। वह पत्थर नहीं, हीरो से युक्त पत्थर था। तुमने उसे सिर्फ 100 पौंड में बेच दिया। वह तो हजारों पौंड का था।

भिखारी फिर बोला, महोदय, यह तो ठीक है कि मैं मूर्ख हूँ। यह भी ठीक है कि मुझे उस पत्थर की पहचान भी नहीं थी, परन्तु आप तो मूर्ख नहीं हैं। आप को तो उसकी ठीक पहचान थी, फिर भला आप कैसे चूक गए? यह मौका तो आपकी जिन्दगी में दुबारा नहीं आयेगा। कभी–कभी एक चूक इनसान को धरातल पर पटक देती है।

जौहरी, भिखारी के मुँह की तरफ देखता ही रह गया।

इनसान को महानतम कामयाबी तभी हासिल हो सकती है जब वह अवसरों का अधिकतम लाभ उठाना और अपने ज्ञान व संसाधनों का अधिकतम इस्तेमाल करना जानता हो। जिस इनसान को अकेले और तुरन्त सही निर्णय की कला आती है, वही पैसा कमा सकता है। देरी से किये गये निर्णय से कभी–कभी नुकसान होता है। इस जिन्दगी के खेल में—जिसे हम जिन्दगी कहते हैं—बस, हमें एक मौका मिलता है। जिन्दगी एक रिवाइंडिंग (Rewinding) मशीन का बटन नहीं है—जिसे घुमा कर दोबारा देखा जा सके। बस, हमें एक मौका मिलता है—जिस पर पूरी जिन्दगी दाँव पर लगी होती है और साथ में आने वाली पीढ़ियाँ भी। इसलिए इनसान के पास जो एक छठी ज्ञानेंद्रिय होती है—जिसे हम कॉमन सेन्स (Commonsense) कहते हैं, उसका इस्तेमाल, मौकों पर करना नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि अवसर किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता। हर इनसान के जीवन में अवसर आते और चले जाते हैं। आवश्यकता है—इनको पहचानने की। इसमें अवसरों का कोई दोष नहीं होगा—अगर आप पहचानोगे नहीं तो यह कमजोरी आपकी है।

केरियर मेरे लिए है

जीवन में आप क्या हासिल करते हैं और किन ऊँचाइयों तक पहुँचते हैं, यह एक बड़ी सीमा तक आपके केरियर चुनाव पर भी निर्भर करता है। लेकिन अगर आम लोगों से पूछा जाए कि उनके लिए कौनसा केरियर सबसे अच्छा है, तो अधिकतर के पास इसका स्पष्ट जवाब नहीं होता। कारण तो बस एक ही है कि समय रहते और समय की सीमा तक उसका चुनाव नहीं कर पाते, इसलिए

वो जीवन की मझधार के बीच फंस जाते हैं। परिणाम यह होता है कि लोगों के लिए काम और पढ़ाई एक बोझ बन जाते हैं और उन्हें काम में आनन्द नहीं आता, न पढ़ाई में मन लगता है।

एक आदर्श केरियर A Role Model Career

अच्छे भविष्य की योजना आप एक रात में तो कम से कम नहीं बना सकते। यह एक लगातार, सतत क्रिया है। मुख्य रूप से देखा जाए तो इसके तीन चरण हैं। इन तीन स्टेप (Steps) पर आप गौर करें तो आप अपने लिए अनुकूल केरियर का निर्णय ले सकते हैं।

पहला चरण : तलाशें एक आदर्श विकल्प

इसके लिए जरूरी है कि आप नियमित रूप से अपनी जानकारी को अपडेट करते रहें। इस काम के लिए पत्र–पत्रिकाएँ, इंटरनेट, दोस्तों और धनवान इनसानों की कार्यशैली और कार्यप्रणाली से सहायता ले सकते हैं। एक छोटा आइडिया भी इनसान को बड़ी ऊँचाई पर पहुँचा सकता है। ऐसे इनसानों से दोस्ती और सलाह जारी रख सकते हैं जो आपकी पसन्द के क्षेत्रों में काम कर रहे हों।

दूसरा चरण : आपका व्यक्तित्व क्या है—जानें

अपने व्यक्तित्व का गुणात्मक अध्ययन करें और जानें कि आपकी क्षमताएँ क्या और कितनी गहरी हैं। वो कौनसी चीज है जो आपको अच्छी लगती है। काम कोई छोटा या बड़ा नहीं होता, करने वाला ही छोटा और बड़ा बन जाता है।

अपना पैमाना खुद तय करो

इटली के रोम शहर में प्रसिद्ध चित्रकार मि. ऐलन जोनसन ने अपने आर्किटेक्ट मित्र मि. टिम कारलो को विशेष आग्रह कर आर्ट गैलरी में प्रदर्शित प्रसिद्ध चित्रों का निरीक्षण करवा कर अपनी राय जाहिर करने का अनुरोध किया, तो मि. टिम कारलो बोले, इसमें कोई शक नहीं कि दुनिया ऐसे चित्रों को आलीशान पेंटिंग का दर्जा दे रही है। पर इन चित्रों के रंगों में तो असली रंगों का मिश्रण नहीं है। ना ही इन रंगों में कोई खुशबू है। अतः मुझे इन पेंटिंग्स में जान नहीं लगी।

कुछ समय बाद प्रसिद्ध आर्किटेक्ट मि. टिम कारलो ने अपने द्वारा बनाए गए विश्व के अनूठे बँगले का निरीक्षण करने मि. ऐलन जोनसन को बुलावा भेजा और पूरे आलीशान बँगले की कलाकृतियाँ, शिल्पकारी के अनूठे नमूने, जीवन्त गार्डन व भव्य बँगले को देखने के बाद उनकी राय जाननी चाही तो मि. ऐलन बोले, इसमें कोई शक नहीं कि दुनिया का अनूठा, आलीशान बँगला आपकी कलाकृति और साज-सज्जा से सुशोभित है, परन्तु शिल्पकारी के उत्कृष्ट नमूनों में जान नहीं होने के कारण बँगले में मुझे कोई विशेषताएँ नजर नहीं आई। यह बँगला तो बेजान है।

मि. टिम कारलो, दोस्त ऐलन जोनसन के मुँह की तरफ देखते ही रह गए। इनसान दुनिया को अपने चश्मे से देखता है। देखने का पैमाना भी अलग-अलग होता है। कुछ लोग सोने में सुगन्ध ढूँढ़ते हैं। साहसी और ईमानदार इनसान आलोचना को झेलने की शक्ति रखता है। स्वयं का मूल्य दूसरों के मापदण्डों पर आधारित नहीं होता है। खुद को परिभाषित करने के लिए इनसान के पास विभिन्न प्रकार के विकल्प रहते हैं। खुद के मापदण्ड निर्धारित कर स्वयं को बुद्धिमान समझना ही समझदारी है। वहीं दूसरी ओर रिश्तेदारों, मित्रों या किसी अन्य द्वारा बनाए गए नियमों और पैमानों के आधार पर आप स्वयं को पिछड़ा हुआ कभी भी न समझें। वास्तव में आप अपने को जितना अधिक प्रसिद्ध बनाए रखने में सफल होते हैं, आप उतने ही अधिक बुद्धिमान हैं। यह सम्भव हो सकता है कि कुछ क्षेत्रों में आप अनुकूल प्रदर्शन न कर पाते हों, तो भी कोई घबराने वाली बात नहीं।

तीसरा चरण : तैयारी और चुनाव

जब आप फैसला कर चुके होते हैं कि आपको किस क्षेत्र में जाना है, तो इसके लिए सही रूप से की गई तैयारी की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। महत्त्वपूर्ण यह तो है ही कि आपने किस क्षेत्र को चुना, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह भी है कि फैसला करने से पहले आपके पास उस क्षेत्र की कितनी जानकारियाँ मौजूद हैं, जिनके आधार पर आपने इतना बड़ा फैसला लिया। जानकारियाँ

इकट्ठी करें कि इसके लिए क्या–क्या करना होगा? इसके लिए ट्रेनिंग की भी जरूरत पड़े तो ट्रेनिंग ले लेनी चाहिए। परन्तु इन सब में आपको मागदर्शक और माता–पिता के मार्गदर्शन की आवशयकता है—जो कच्ची उम्र में ही सिखाया और प्राप्त किया जाता है।

नाकामयाबी एक पड़ाव है, मंजिल का अंतिम छोर नहीं।

—डा. राम बजाज

एक आदर्श केरियर का चुनाव नहीं हो जाए तो

आपने कइयों के सपनों को टूटते देखा होगा। कई बार असफलता का इनसान पर इतना गहरा असर पड़ता है कि उसकी जीने की चाह ही मिट जाती है। अच्छा केरियर, असफलता, कामयाबी, नाकामयाबी—ये सब बड़ी विचित्र सी बातें हैं। गहराई से सोचने पर थोड़ी निरर्थक–सी बातें लगती हैं। कर्म करते रहना ही अपने–आप में सफलता का मूलमन्त्र है। एक वक्त एक अच्छा केरियर नहीं चुन पाए तो क्या बात हुई, दूसरा केरियर भी तो आप चुन ही सकते हैं। जिस एक कार्य में आपको असफलता मिली हो, वही तो जीवन में सब–कुछ नहीं है। नए आयाम लक्ष्य में रख, नया केरियर ढूँढ़ा जा सकता है। जरूरत सिर्फ आत्मशक्ति को पहचानने की है। कुदरत ने इससे किसी को भी महरूम नहीं रखा है। जरूरत है उसे पहचान कर, मजबूती प्रदान करने की। कदम–कदम पर जीवन में हर मोड़ पर आपको ऐसे इनसान मिलेंगे, जिनसे आप प्रेरणा ले सकते हैं। अच्छी किताबों का भण्डार भरा पड़ा है। उनमें से एक किताब को अपनी प्रेरणा मान कर, नए सिरे से नई शुरुआत कर सकते हैं। नाकामयाबी का मतलब यह नहीं कि आप गिर गए, बल्कि यह है कि गिरने के बाद पड़े ही रह गए, उठे ही नहीं। नाकामयाबी एक पड़ाव है, अन्तिम मंजिल नहीं।

अतः संकल्प करें, जो आपके मन में होता है। मन मस्तिष्क को आदेश देता है। मस्तिष्क विभिन्न ख्वाबों और सपनों को संचालित करता है। आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर विद्यार्थी–जीवन और सम्पूर्ण जीवन को सार्थक बना जाता है। यह अर्जुन की आँख का सच है जो किसी भी अमीरी के फल को प्राप्त कर सकता है। भले ही श्रीकृष्ण भगवान् ने सुदामा को वर्तमान युग में ज्योतिषी व वास्तुशास्त्र के केरियर का सुझाव दिया है। नए आयाम, नया केरियर ढूँढ़ा जा सकता है, जरूरत है एक विचार, एक सोच को Idea में बदलने की।

श्रीकृष्ण और सुदामा

भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में भगवान् श्रीकृष्ण और गरीब सुदामा की दोस्ती के किस्सों से भला कौन वाकिफ नहीं है! वर्तमान युग में सुदामा पुनः अपने दोस्त श्रीकृष्ण के पास पहुँचे और कहने लगे, हे मेरे दोस्त, इस प्रतियोगातात्मक युग में कोई पंडित को पूछता नहीं। कुछ ऐसी तरकीब बतलाओ कि मेरी आर्थिक तंगी सदा के लिए दूर हो जाए। भगवान् श्रीकृष्ण काफी देर तक सोचते रहे, फिर बोले, सुदामा, मेरे हिसाब से अगर तुम ज्योतिषी, जिसमें अंकशास्त्र के ज्ञान के अलावा, वास्तुशास्त्र ज्ञाता बन जाओ तो खूब तरक्की करोगे।

परन्तु भगवान्, इसमें तो हथेलियों की रेखाओं का सम्पूर्ण ज्ञान जरूरी है, फिर वास्तुकार को तो दिशाओं और उनसे बनने वाले कोणों (Angles) की भी तो जानकारी चाहिए। मुझे तो इनकी जानकारियाँ नहीं हैं, फिर भला मैं लोगों का भाग्य कैसे पढ़ सकता हूँ?—सुदामा बोले। सुदामा जरा सुनो, श्रीकृष्ण बोले, हस्तरेखाओं की भाषा तो मुझे भी नहीं आती, क्योंकि जीवन का सम्बन्ध अगर रेखाओं से होता है तो किसी एक रेखा की लम्बाई या मोटाई से किसी का भी भाग्य जाना नहीं जा सकता। इन रेखाओं का Formatations & Combinations इस ढंग से होते हैं कि वातावरण, समय, वेशभूषा, भविष्य में घटित जानकारियाँ, वर्तमान में स्थिति को भाँपकर, रहस्य को खोल दो, 50–50 (Fifity-Fifty) तो आकलन किसी भी हालत में (Probability Law) संभावित निर्णय पर खरा उतर ही जावेगा। फिर बाकी तुम इतने होशियार पंडित हो कि स्थिति को संभाल ही लोगे। परामर्श की राशि, सामने वाले इनसान की आर्थिक स्थिति पर होगी। जितनी मोटी रकम अपने परामर्श की रखोगे, उतने ही बड़े ज्योतिषकार, वास्तुकार व अंकज्योतिषी कहलाओगे।

श्रीकृष्ण का सुझाव सुदामा को पसन्द आया और खुशी–खुशी घर लौट आए और सुदामा पंडित एक महान् ज्योतिषी, वास्तुकार बन बैठे। उन्हें आर्थिक संकट कभी भी नहीं झेलना पड़ा।

बायो तकनीक की मलिका—किरण मजूमदार शॉ और मालकिन

बाइकोन इंडिया कॉरपोरेशन के मालिक पद्मश्री किरण मजूमदार शॉ, जिनकी कुल निजी सम्पति 2000 करोड़ रुपयों से ऊपर हो चुकी है, बंगलूर, कर्नाटक शहर के तटीय किनारे पर अपने दोस्त के साथ घूम रही थी और साथ में उनका भरोसेमन्द बायो–तकनीकी विशेषज्ञ डॉ. कृष्णमूर्ति थोड़ा पीछे चल रहे थे। किरण मजूमदार से उसके साथी दोस्त ने पूछा, सुश्री किरण, क्या आप बतला सकती हैं कि आप और मि. कृष्णमूर्ति में क्या अन्तर है ? डा. कृष्णमूर्ति दुनिया के जाने–माने बायो–तकनीकी के विशेषज्ञ हैं तथा आपकी बाइकोन इंडिया की सफलता का श्रेय भी मि. कृष्णमूर्ति को है।

किरण मजूमदार शॉ ने अपने दोस्त को कहा, मेरी अच्छी दोस्त, मेरे और कृष्णमूर्ति में फर्क यह है कि मैं बाइकोन इंडिया कम्पनी की मालकिन हूँ जबकि मि. मूर्ति उसमें मुख्य बायोतकनीकी सलाहकार हैं, जिनकी तनख्वाह 1.50 लाख डालर प्रतिमाह है। सारा कामकाज इन्हीं के कंधों पर है। दोस्त ने एक बार फिर मजूमदार से पूछा, किरण, इसका मतलब यही है कि तुम इस कम्पनी की मालकिन हो और मि. कृष्णमूर्ति इस कम्पनी में नौकर हैं। किरण मजूमदार ने जवाब दिया, हाँ, मेरी दोस्त, परन्तु सारा बायोटक्नोलोजी का विस्तार इन्हीं महाशय द्वारा संचालित हुआ है जिसके कारण आज हिन्दुस्तान और पूरे संसार में इस कम्पनी का नाम है।

पीछे चल रहे डा. कृष्णमूर्ति इन दोनों के बीच का वार्तालाप सुन रहे थे। उन्होंने एक कागज अपनी जेब से निकाला और किरण मजूमदार से पैन माँगा। मि. कृष्णमूर्ति ने अपना इस्तीफा लिख कर किरण मजूमदार के हाथ थमा दिया और कहा, मैडम, नौकर और मालिक का फर्क मैंने आज जान लिया है। मुझे आज से आपकी कम्पनी में काम नहीं करना है। मैं मेरी स्वयं की एक कम्पनी खोल रहा हूँ, कृपया मेरा इस्तीफा स्वीकार करके, मेरी तनख्वाह का हिसाब करके, मेरी नई कम्पनी के कार्यालय में भिजवा देवें।

मैडम किरण मजूमदार डा. मूर्ति की ओर देखती ही रह गई। डा. मूर्ति पीछे मुड़ कर तेज कदमों से अपनी दूसरी नई मंजिल की तलाश में आगे बढ़ने का नया लक्ष्य लेकर, एक नई कम्पनी की बड़ी नींव रखने की तैयारी में बिना एक क्षण गँवाए लग गए थे।

चाँद छूने की हसरत की कीमत इतनी नहीं होनी
चाहिए कि अंधेरे में सारा जीवन ही गुम हो जाए।

—डा. राम बजाज

प्रबन्ध के छात्रों पर विदेशी कम्पनियों का भूत

वर्ष 2005 में भारतीय प्रबन्धन संस्थान (आई.आई.एम.) अहमदाबाद के छात्र रवि सिंघवी को लन्दन में नियुक्ति के लिए 152000 डॉलर वार्षिक का प्रस्ताव मिला है। जानकारी के अनुसार यह अभी तक का प्रबन्ध के किसी छात्र को मिला सबसे बड़ा प्रस्ताव माना जा रहा है। इसी तरह आई.एम.एम. बंगलौर के छात्र कुमार गौतम को 1,20,000 डालर (करीब 154 लाख रु.) वार्षिक और कोलकाता के एक छात्र को 1,00,000 डालर वार्षिक (करीब 45 लाख रु.) के प्रस्ताव विदेशों में नियुक्ति के लिए हासिल हुए हैं। प्रस्तावित नौकरियों और वेतन पर गौर करें तो आम युवा उम्मीदों के पंख भले ही लगा लें लेकिन उड़ने के लिए विदेशी कम्पनियों की ही लगाम झेलनी होगी। आप अपनी मर्जी से कहीं उड़ नहीं पायेंगे।

आइये, रवि संघवी की जिन्दगी में थोड़ा झाँकें कि कितना समय लगा इस नौकरी तक पहुँचने में

(1) दिल्ली के प्रतिष्ठित श्रीराम कालेज आफ कॉमर्स से स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

(2) स्नातक के बाद 2.5 साल में चार्टर्ड एकाउण्टेंसी की डिग्री हासिल की।

(3) रवि सिंघवी ने कुछ समय के संघर्ष के बाद अगले तीन सालों में तीन नौकरियाँ बदल लीं। किसी भी नौकरी से संतुष्ट नजर नहीं आए, इसलिए नौकरियाँ बदलनी पड़ीं।

(4) रवि ने आई.आई.एम. में दाखिले के लिए कैट परीक्षा की तैयारियाँ कीं

और परीक्षा दी। 2003 मई–जून में अहमदाबाद आई.आई.एम. में भर्ती हुए।

(5) 2005 में आई.आई.एम. अहमदाबाद से प्रबन्धन की डिग्री में उत्तीर्ण हुए।

(6) लन्दन की विदेशी कम्पनी में सालाना 1,52,000 डालर का प्रस्ताव मिला, यानी करीब 12666 डालर प्रति महीना।

12666 डालर प्रति महीने के हिसाब से विदेशी कम्पनियों की नौकरी में बचत कितनी होगी—इसका अन्दाजा इस उदाहरण से मिलेगा कि महीने के अन्त में, इनको भी किसी बैंक का क्रेडिट कार्ड बनवा कर, इस्तेमाल करना पड़ेगा—यानी कि उधार, ब्याज पर पैसा लेना ही पड़ेगा, नहीं तो बँगला, गाड़ी, छुट्टियों का खर्चा, मेडिकल सेवाएँ, टैक्स भरना आदि का काफी बड़ा भार उन पर हमेशा ही रहेगा।

एक अक्लमन्द इनसान अपने से ज्यादा समझदार और विशेषज्ञ इनसानों को नौकरी पर इसलिए रख सकता है क्योंकि वो जानता है कि 99.9999 परसेन्ट लोग दूसरों के लिए ही नौकरी करते हैं और अक्लमंद लोग इन लोगों की सोच को समझ कर इनसे महीने के 12666 डालर के हिसाब से काम करवाना जानते हैं। स्कूलों और कालेजों में जो पढ़ाया जाता है – वही हम बन जाते हैं। असल में गलती किसी भी इनसान की इसी जगह होती है। लोग अपनी अक्ल से और अपनी विशेषज्ञता से करवाना भूलकर, अपना सारा जीवन, दूसरे के काम पर ध्यान देने में इसलिए लगा देते हैं क्योंकि वो अक्लमन्द इनसान आपको 152000 डालर प्रतिवर्ष की नौकरी दे रहा है। इस तरह काबिल, समझदार, अक्लमन्द, अमीर इनसान – दूसरों के ज्ञान को इस्तेमाल करके स्वयं को बहुत ज्यादा अमीर बना रहा है। क्योंकि वह जानता है कि अमीर और गरीब, सभी इनसानों के पास दिन के 24 घण्टे ही होते हैं, फिर भला इन चौबीस घंटों को 10 दिन के 240 घण्टों में परिवर्तित कैसे किया जावे—बस यही कला आदमी को 1,52,000 डालर की नौकरी पर रख कर ही प्रबन्ध करवा रही है।

अगर आपको इम्तहान के बारे में पता है तो बेहतर यही होगा कि आप परीक्षा की पूरी तैयारी कर लें।

—डा. राम बजाज

क्या प्रबन्ध के छात्र स्वयं के भविष्य का प्रबन्ध नहीं कर सकते? Does M.B.A. Student do not manage their future?

हाँ, यह बात भी इतनी ही सच है जितनी कि उसको 1,52,000 डालर प्रतिवर्ष की नौकरी का है। जो आई.आई.एम. के छात्र या अन्य प्रबन्ध संस्थान के छोटा, दुनिया की बेहतरीन से बेहतरीन विदेशी और देशी कम्पनियों का वित्त, मार्केटिंग, टेलीकम्यूनिकेशन, आपरेशन्स और ह्यूमन रिसोर्सेज (Human Resources) से जुड़ी समस्याओं का उत्तम ढंग से सरलीकरण के साथ, समाधान कर रहे हैं। फिर क्यों वो अपने भविष्य का प्रबन्ध न कर, अपनी नौकरी के जरिए—इन्हीं कम्पनियों के हाथ अपने को बेच देते हैं? जवाब आपको देना है। किसी भी क्षेत्र में पहलकदमी करने वाले को पायोनियर कहा जाता है। पायोनियर सबसे अग्रणी होता है, क्योंकि उसके द्वारा ही किसी काम का प्रबन्ध किया जाता है। हाँ, आप 1,52,000 डालर प्रतिवर्ष की नौकरी में जरूर पायोनियर हैं। परन्तु याद रखें कि हाथ फैलाने वाले (नौकरी वाले) इनसान का स्वाभिमान और गुण क्षिण हो जाते है। मात्र शिक्षा का पैमाना नौकरी में प्रतिवर्ष की कमाई मात्र ही नहीं हो सकता। 2008 में तो इससे भी ज्यादा नौकरी मिलने लग गई है।

होता यह है कि हम हर व्यक्ति को देखकर, कुछ–न–कुछ निर्णय कर बैठते हैं कि यह अच्छा है या बुरा है। बस यही निर्णय, जब भी हम नौकरी की बात करेंगे, हमारा पिछला निर्णय 1,52,000 डालर प्रति साल का—हमारे मन–मस्तिष्क पर छाया रहेगा और हम जब भी नौकरी की बात करेंगे, हमारा पिछला निर्णय ही हमारे व्यवहार को तय करेगा कि आई.आई.एम. संस्थान के छात्रों की नौकरी की कीमत बहुत बड़ी है, जबकि है इसका उलटा, क्योंकि अक्लमन्द इनसान की दलील कभी थोथी नहीं हो सकती और ना ही उसका नजरिया और अनुभव थोथा होगा, तभी तो वह सही परामर्शदाताओं की सेवाओं का उपयोग कर रहा है। साथ ही वो यह भी जानता है कि गरीब विशेषज्ञ को 'काम' की जरूरत है, जबकि उस अक्लमन्द को दाम की जरूरत है।

अब जरा उस गैरेज में झाँकें—जिसने सुपर कम्प्यूटर 'थंडर' बनाया

उत्तरी अमेरिका के सबसे बड़े ताकतवर सुपर कम्प्यूटर 'थंडर' का निर्माण एक भारतीय उद्योगपति Chits अरुण की कम्पनी कैलिफोर्निया डिजिटल कॉरपोरेशन ने किया है। इस 'थंडर' सुपर

कम्प्यूटर के निर्माण ने इस कम्पनी और मालिक बीप्जे अरुण को दुनिया की सबसे बड़ी कम्पनियों आईबीएम (IBM) और डेल के मुकाबले खड़ा कर दिया है। कर्नाटक राज्य के बैंगलूर विश्वविद्यालय में पढ़े अरुण ने 1993 में एक गैरेज से अपनी कम्पनी की शुरुआत की थी, जिसने आज सात सबसे अधिक शक्तिशाली सुपर कम्प्यूटरों में से दो 19.94 'टेराफ्लाप थंडर' और 1.5 'टेराफ्लाप सिस्टम एक्स' वर्जीनिया में स्थापित कर दिये हैं। कैलिफोर्निया डिजिटल कॉरपोरेशन (CDC) ने लारेंस लिवरमोर नेशन लैब से 'थंडर' का ठेका लिया, जो आज टाप-500 की सूची में चौथे स्थान पर है। सीडीसी ने अपना कारोबार कैलिफोर्निया के फ्रेमोन्ट में क्रिस्टी स्ट्रीट की छोटी जगह से शुरू किया, जिसे आज अरुण ने कहाँ पहुँचा दिया है! मि. अरुण को भी नौकरी के बड़े अच्छे Offer प्राप्त हुए थे, परन्तु उन सभी को ठुकरा कर अपना स्वयं का धन्धा-एक छोटे गैराज से शुरू किया, जिसे आज शिखर पर पहुँचा दिया है।

शिक्षा और प्रबन्धन के छात्रों को एक साथ दो काम करने होते हैं परिवार, समाज, देश के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना, जो विदेशों में नौकरी करके हरगिज नहीं कर सकते और दूसरा अपने-आप को परिवर्तन के लिए तैयार करना। हमारी प्रबन्धन शिक्षा इस बात की साक्षी है कि विदेशों में काम करने वाले ज्यादातर इनसान-वहीं पर बस जाते हैं, जिसके कारण से ये नौकरियाँ सार्थक नहीं हो पाई हैं। इसमें एक ऐसी कमी है जो खटकती रहती है और वह है उनके माँ-बाप के लिए-अपने बच्चों से हमेशा नहीं तो बहुत समय तक बिछड़े रहना। देश की नौकरी और विदेशों में नौकरी का बस यही एक बुनियादी फर्क है। नर्क और स्वर्ग का फासला बराबर है—परन्तु है एक दूसरे की विपरीत दिशा में। इसलिए गंभीरता आपकी नौकरी में नहीं, आपके निर्णय में होनी चाहिए।

Great Minds discuss Ideas,
Average minds discuss events,
Small minds discuss people and service.

विदेशी नौकरियों में देश भिन्न है, लोग भिन्न हैं, संस्कृति भिन्न और शैली भी भिन्न है। अतः प्रबन्धन शैली भी भिन्न होनी चाहिए, फिर भला, हम भिन्न

नहीं होंगे, इसकी क्या गारण्टी है? क्योंकि पश्चिमी देशों में लोग एकल परिवार में ज्यादा विश्वास करते हैं, जबकि जापान और हिन्दुस्तान के लोग अभी भी थोड़ा बहुत संयुक्त परिवार में रहते हैं, जिसमें सम्बन्धों का बड़ा भारी महत्त्व है, साथ में एक–दूसरे के प्रति अगाध स्नेह और आदर अभी भी विद्यमान है।

अन्त में बहुत–कुछ शिक्षा देने की आदत हमारी नई नहीं है। भारत में रामायण और महाभारत जैसे काव्य, आपस में गुंथी कथाओं, संवादों, दुविधाओं और सभी ज्ञान के विश्लेषकों के अपने–अपने वैकल्पिक नजरिये, अपने तर्क और बहस और जवाबी तर्क से बुने गए हैं। यहाँ तक कि हिन्दू ग्रन्थ का सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला पाठ 'गीता', जो कि महाभारत का ही एक हिस्सा है, असल में सभी संत विश्लेषक अपने–अपने तर्क के हिसाब से उसकी व्याख्या करते हैं और अपनी काबिलीयत का लोहा मनवाते हैं। परन्तु यहाँ आपकी काबिलीयत का लोहा आपकी कम्पनी दूसरी कम्पनियों को प्रतिस्पर्द्धा की दौड़ में पछाड़ करके मना रही है। जिसमें आपकी अक्ल का इस्तेमाल आप स्वयं अपने लिए नहीं – बल्कि किसी और के लिए कर रहे हैं।

विशेषज्ञों की राय ही एक विशेष राय होती है।
An Advise of expert is a an expert advise.

—डा. राम बजाज

अपने–आपको बदलो Change Yourself

जिन्दगी के किसी भी पड़ाव पर दुनिया में शायद ही कोई ऐसा इनसान हो, जिसने एक बार भी अपनी जिन्दगी दोबारा नए सिरे से जीने की इच्छा नहीं की हो या ना सोचा हो, कि काश! मैं उस जगह होता तो मेरी जिन्दगी में कुछ अलग ही जोश होता, आगे बढ़ने का जुनून होता, अमीर बनने का नया तरीका इस्तेमाल करता, नौकरी की बजाय स्वयं के कार्य का प्रबन्धन ढंग से करता होता। सपने पूरे करने के बाद, इन सपनों को Rewined करने की इच्छा भी होती है। जहाँ कहीं भी गलती का एहसास हो जाये, उसको सुधार कर नए सिरे से सपने पूरे करने के लिए मन में छटपटाहट अवश्य रही है। हम अपनी बीती जिन्दगी में कभी भी पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होते और हमेशा छटपटाते रहते हैं। हमारी जिन्दगी जैसे बीत गई और आगे हम जिसे जैसे जीना चाहते हैं, उसके बीच में एक कशमकश के कारण से अपने बाकी के जीवन में एक

नया रंग भरना कठिन हो जाता है। इस चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए आत्मसंतुष्टी ही एकमात्र इस छटपटाहट का हल हो सकता है। बजाय परेशानियों से दूर भागने के, सचाई का सामना करना चाहिए। समस्या को समझने की कोशिश करें, उसका आत्ममंथन, विश्लेषण करें, तो हमें एक बात अच्छी तरह जहन में रख लेनी होगी कि हम दूसरों को पूर्णतः तो नहीं बदल सकते हैं। हमारी खुशियों की जिम्मेदारी हमारे स्वयं पर है, ना कि दूसरों पर।

कैदी और कबूतर Prisoner & a Pegeon

आदमी और पक्षी में अन्तर

The difference between man & pegeon

एक सजायाफ्ता मांसाहारी कैदी सिंगापुर की जेल में उम्रकैद की सजा भुगत रहा था। एक दिन बिल्ली के पंजे में एक कबूतर फंस गया। कैदी ने कबूतर को मौत के मुँह से छुड़ाया, परन्तु वह मरण स्थिति में था। यह समझ कर कि कबूतर शायद ही जिन्दा रहे, कैदी ने उसकी मरहमपट्टी का बंदोबस्त किया। उसकी एक टाँग टूटने की स्थिति में थी, उसे एक पतली लकड़ी के साथ बाँध दिया। चार–पाँच दिन उसकी लगातार सेवा की। आश्चर्यजनक रूप से कबूतर एक हफ्ते में पूर्णरूप से तंदुरुस्त हो गया। कैदी ने अपने बैरक से कबूतर को आजाद कर हवा में उड़ा दिया।

अच्छे आचरण के लिए कैदी की सजा कम कर दी गई और उसे रिहा कर दिया गया, परन्तु उसकी रिहाई पर उसे लेने वाला कोई इनसान नहीं आने वाला था। जेल के बड़े फाटक से निकल कर बाहर सड़क पर पैदल ही जाने लगा—तो अचानक उसके ऊपर पुष्पवर्षा होने लगी। कैदी ने ऊपर झांक कर देखा तो दंग रह गया। कबूतरों का एक बड़ा झुंड उस पर पुष्पवर्षा कर रहा था।

झुंड में से एक कबूतर नीचे आकर उसके कंधे पर बैठ गया और प्यार से गुटर–गूँ–गुटर–गूँ के गीत गाने लगा। यह वही कबूतर था, जिसकी जान बचाई थी। यह सब देख कर उसकी आँखों में आँसू छलक पड़े। वह सोचने लग गया कि उसके हृदय परिवर्तन में एक पक्षी का कितना बड़ा रोल है! इस दुनिया में हर इनसान अहम है।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसने कितनी छोटी या बड़ी मदद की। किसी की छोटी–छोटी मदद जुड़ते–जुड़ते बड़ी मदद का आकार ले लेती है। कबूतरों के एक–एक फूल ने खूब ढेर सारे फूलों की वर्षा कर दी।

आदमी और पक्षी में यही तो अन्तर है। धरती पर मानव–इनसान अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए कितना जल्दी एहसान भूल जाता है, जबकि पक्षी को देखें तो एक एहसान को चुकाने के लिए, पूरे झुंड के साथ फूलवर्षा! वाह, क्या नायाब तरीका है! पक्षियों का भी कोई जबाब नहीं। जिन्होंने आज इतना बड़ा एहसान चुका दिया! वैसे कोई दया का भाव नहीं था मांसाहारी कैदी के मन में, कबूतर का गोश्त बन कर खा जाना आम बात थी। परन्तु, उस कबूतर के लिए बहुत बड़ा कार्य हो गया। उसे जीवनदान जो मिला उसकी मरहमपट्टी करके, सात दिन तक देखभाल करके उसे आजाद कर देना।

कई बार हम अपनी जिन्दगी से इसलिए भी संतुष्ट नहीं हो पाते क्योंकि हम जिन्दगी के कुचक्रों में इस तरह से घिर जाते हैं, जो हमारे विपरीत होते हैं। ऐसी हालत में, हमें यह देखना होगा कि हमारे हाथ में क्या है और क्या नहीं है। क्या हम कुछ बदल सकते हैं? परिस्थितियों का सामना करने से ही चक्रव्यूह को तोड़ा जा सकता है। कमियों की बजाय गुणों को ही देखें। हम खुद को बदलने की कोशिश करें तो परिस्थितियाँ भी खुद–ब–खुद बदलती नजर आयेगी और वो भी हमारी शर्तों के मुताबिक। यकीन मानिए कि जीवन में नयापन लाना कठिन नहीं है, सिर्फ अपने आपको बदलना पड़ता है। आज भी सचाई बहुत शक्तिशाली हथियार है। सचाई और ईमानदारी के रास्ते चलने वाले इनसान को खुशी ही खुशी मिलती है। सच बोलने की आदत बनाने में सालों भले ही लग जायें, परन्तु अगर एक बार भी आप सच बोलने की आदत बना लें तो आपकी दौलत में कितनी भारी वृद्धि होगी, आप इसका अन्दाजा नहीं लगा सकते। आप आजमाकर देखिए। आप कल्पना नहीं कर पायेंगे कि कामयाबी पर आपका विश्वास, कितनी ऊँचाई पर उड़ रहा है। किसी भी कार्य में कामयाबी मिलना इस बात पर निर्भर करता है कि उक्त कार्य के प्रति आप कितने ईमानदार और सच्चे हैं। याद रखें कि अक्ल और अमीरी की कोई सीमा नहीं होती।